Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ISSN 2454-3705

श्रुतसागर | શ્રુતસાગર
SHRUTSAGAR (MONTHLY)

October-2020, Volume : 07, Issue : 05, Annual Subscription Rs. 150/- Price Per copy Rs. 15/-

EDITOR : Hiren Kishorbhai Doshi

BOOK-POST / PRINTED MATTER

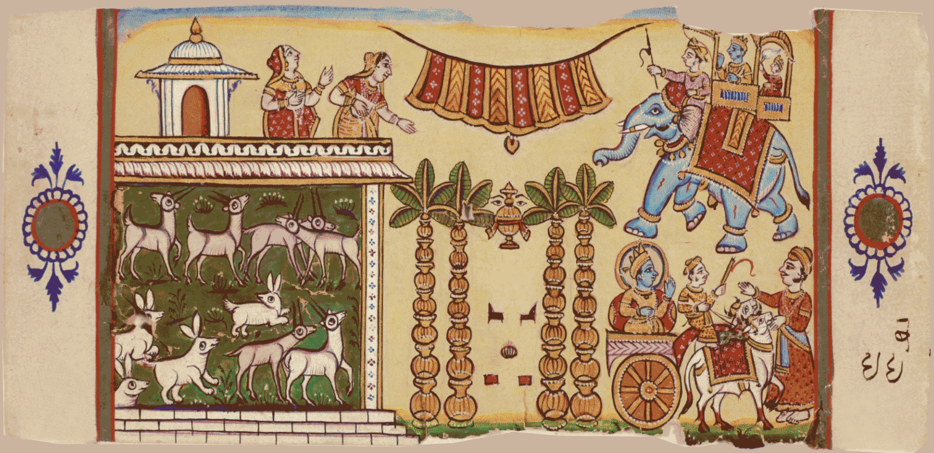

सम्राट् संप्रति संग्रहालय, कोबा में संग्रहित श्री नेमिनाथजी की बारात का चित्र

आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर

For Private and Personal Use Only

पार्श्वनाथ प्रभु के १० भव प्रसंग चित्र ('२३ तीर्थंकरों का चित्रसंपुट' में से साभार)

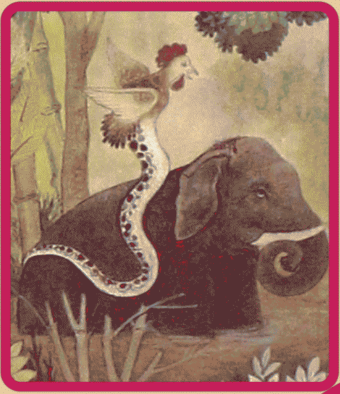

भव-२

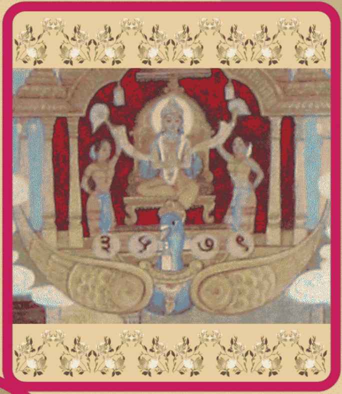

भव-३

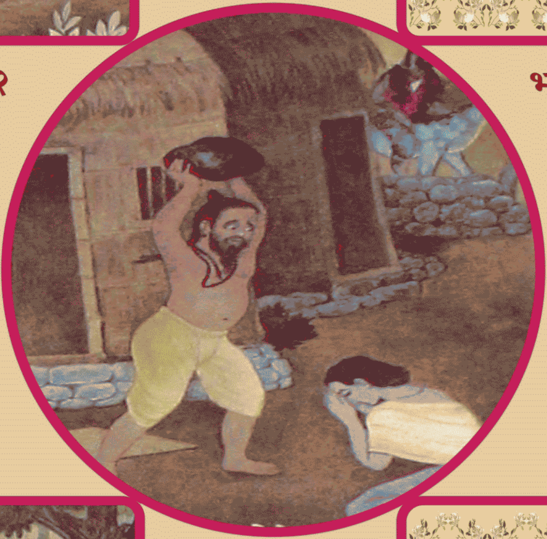

भव-१

भव-४

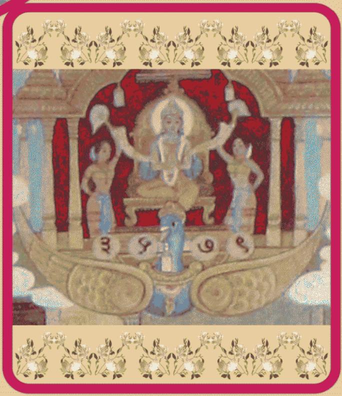

भव-५

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

RNI : GUJMUL/2014/66126 ISSN 2454-3705

आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर का मुखपत्र

श्रुतसागर श्रुतसागर

SHRUTSAGAR (Monthly)

वर्ष-७, अंक-५, कुल अंक-७७, अक्टूबर-२०२०

Year-7, Issue-5, Total Issue-77, October-2020

वार्षिक सदस्यता शुल्क - रु. १५०/- ❖ Yearly Subscription - Rs.150/-

अंक शुल्क - रु. १५/- ❖ Price per copy Rs. 15/-

आशीर्वाद

राष्ट्रसंत प. पू. आचार्य श्री पद्मसागरसूरीश्वरजी म. सा.

❖ संपादक ❖

हिरेन किशोरभाई दोशी

❖ सह संपादक ❖

रामप्रकाश झा

❖ संपादन निर्देशक ❖

गजेन्द्रभाई शाह

❖ संपादन सहयोगी ❖

राहुल आर. त्रिवेदी

एवं

ज्ञानमंदिर परिवार

१५ अक्टूबर, २०२०, वि. सं. २०७६, अश्विन कृष्ण पक्ष-१४

प्रकाशक

आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर

(जैन व प्राच्यविद्या शोध-संस्थान एवं ग्रन्थालय)

श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र, कोबा, गांधीनगर-३८२४२६

फोन नं. (079) 23276204, 205, 252 फैक्स : (079) 23276249, वॉट्स-एप 7575001081

Website : www.kobatirth.org **Email :** gyanmandir@kobatirth.org

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अनुक्रम

१.	संपादकीय	रामप्रकाश झा	५
२.	गुरुवाणी	आचार्य श्री बुद्धिसागरसूरिजी	६
३.	Awakening	Acharya Padmasagarsuri	८
४.	अनेकार्थशब्दसन्दृब्ध केटलीक अप्रगट कृतिओ	गणि सुयशचंद्र-सुजसचंद्रविजयजी	१०
५.	२० स्थानकतप स्तवन	उपेन्द्र डी. भट्ट	२०
६.	पार्श्वनाथ दशभव स्तवन	महेन्द्र सोभागमलजी तिलेसरा	२५
७.	धर्मकथानुयोगनी महत्ता अने श्री देवभद्रसूरिकृत कथारत्नकोष	मुनिश्री पुण्यविजयजी	२८
८.	प्राचीन पाण्डुलिपियों की संरक्षण विधि	राहुल आर. त्रिवेदी	३०
९.	पुस्तक समीक्षा	डॉ. हेमंतकुमार	३३
१०.	समाचार सार	-	३४

धन वदि तो धर्म कर, धर्म विण धन न होए ।
जो तुंई धन धन करे, तो दोमां एक न होये ॥

प्रत क्र. १३५०४८

भावार्थ- धन बढता है तो धर्म कर। धर्म के बिना धन नहीं होता है। यदि तु मात्र धन का ही रटन करता रहेगा, तो न धन प्राप्त होगा और न ही धर्म। दोनों में से एक भी हाथ नहीं लगेगा।

❖ प्राप्तिस्थान ❖

आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर
तीन बंगला, टोलकनगर, होटल हेरीटेज़ की गली में
डॉ. प्रणव नाणावटी क्लीनिक के पास, पालडी
अहमदाबाद - ३८०००७, फोन नं. (०७९) २६५८२३५५

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

संपादकीय

रामप्रकाश झा

श्रुतसागर का यह नवीन अंक आपके करकमलों में समर्पित करते हुए हमें अत्यन्त प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। इस अंक में योगनिष्ठ आचार्यश्री बुद्धिसागरसूरीश्वरजी की अमृतमयी वाणी व स्थायी स्तम्भों के अतिरिक्त दो अप्रकाशित कृतियों का प्रकाशन किया जा रहा है।

सर्वप्रथम **"गुरुवाणी"** शीर्षक के अन्तर्गत जैनधर्म का स्वरूप, उसके मुख्य उद्देश्य तथा उसके प्रचार-प्रसार से सम्बन्धित बातों पर प्रकाश डाला गया है। द्वितीय लेख राष्ट्रसंत आचार्य श्रीपद्मसागरसूरीश्वरजी के प्रवचनों की पुस्तक **'Awakening'** से क्रमशः संकलित किया गया है, जिसमें एक राजा तथा विद्वान की वार्त्ता के द्वारा सभी धर्मग्रन्थों के सारतत्त्वों के ऊपर प्रकाश डाला गया है।

अप्रकाशित कृति प्रकाशन के क्रम में सर्वप्रथम पूज्य गणिवर्य श्रीसुयशचन्द्र-सुजशचन्द्रविजयजी म. सा. के द्वारा संपादित **"अनेकार्थ शब्दसंदृब्ध केटलीक अप्रगट कृतिओ"** इस लेखमाला के अंतर्गत प्रकाश्यमान इस तरह की कुल ६ कृतियों में से प्रथम **श्रीनेमिनाथ स्तवन** स्वोपज्ञ टीका के साथ प्रकाशित किया जा रहा है। जिसके अन्तर्गत कर्त्ता श्री हेमविजयजी ने अलग-अलग पदों के साथ **१०८ बार** "कमल" शब्द का अलग-अलग अर्थों में प्रयोग कर प्रभु श्री नेमिनाथजी की स्तवना की है। द्वितीय कृति के रूप में आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमन्दिर के पंडित श्री उपेन्द्र भट्ट के द्वारा सम्पादित **"२० स्थानकतप स्तवन"** प्रकाशित किया जा रहा है। इस कृति के कर्त्ता श्री वीरविजयजी ने २२ गाथाओं के अन्तर्गत अरिहन्त सिद्धादि बीस स्थानकों तथा उनके भेदों का वर्णन किया है। तृतीय कृति के अन्तर्गत श्री महेन्द्र सोभागमलजी तिलेसरा के द्वारा सम्पादित **"पार्श्वनाथदसभव स्तवन"** का प्रकाशन किया जा रहा है। इस कृति के कर्त्ता पण्डित प्रेमविजयजी ने मात्र १५ गाथा की इस लघुकृति में पार्श्वनाथ भगवान के तीर्थों की महिमा का वर्णन करते हुए उनके नामस्मरण का फल वर्णित किया है।

पुनःप्रकाशन श्रेणी के रूप में इस अंक में मुनि पुण्यविजय लिखित **"कथारत्नकोश अने तेना कर्त्ता श्री देवभद्रसूरि"** का प्रकाशन किया जा रहा है, जिसके अन्तर्गत जनसामान्य हेतु जैन कथा साहित्य की उपयोगिता तथा उसकी महत्ता के ऊपर प्रकाश डाला गया है।

गतांक से जारी **"पाण्डुलिपि संरक्षण विधि"** शीर्षक लेख में ज्ञानमंदिर के पं. श्रीराहुलभाई त्रिवेदी के द्वारा उपचारात्मक संरक्षणविधि के अन्तर्गत जीर्ण हस्तप्रतों की मरम्मत, सफाई तथा सुरक्षा की संक्षेप में जानकारी दी गई है।

पुस्तक समीक्षा के अन्तर्गत श्री राजसुंदरविजयजी द्वारा निर्मित **"सुंदरैकाक्षरकोष"** पुस्तक की समीक्षा प्रस्तुत की गई है। संस्कृत कोष के इस विशिष्ट ग्रन्थ में मात्र एकाक्षरी शब्दों का ही संकलन किया गया है। पुण्यसौम्या नामकी स्वोपज्ञ वृत्ति के कारण इस पुस्तक का महत्त्व बढ़ गया है।

हम आशा करते हैं कि इस अंक में संकलित सामग्रियों के द्वारा हमारे वाचक अवश्य लाभान्वित होंगे व अपने महत्त्वपूर्ण सुझावों से हमें अवगत कराने की कृपा करेंगे।

❊ ♦ ❊

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गुरुवाणी

आचार्य श्री बुद्धिसागरसूरिजी

जैनदृष्टिए आत्मानुं अनन्त वर्तुल

सर्वजीवो संबंधी श्रेयः करवाना विचारोमां अने आचारोमां मग्न रहेनार जैनो धर्म माटे मनुष्योनुं रक्त वहेवरावे एवो बनाव उत्सर्ग मार्गे कदी भूतकालमां बन्यो नथी, वर्तमानमां बनतो नथी अने भविष्यमां बननार नथी। सर्व जीवोना कल्याणार्थे अने सर्व जीवोना गुणोनी उत्क्रान्ति अने सर्वजीवोनी साथे मैत्रीभाव धारण करीने वर्त्तवा माटे अने सर्व जीवोने मोक्ष प्राप्त कराववा माटे श्रीमहावीर प्रभुए जैनधर्मने उपदेश्यो छे।

अतएव सर्व विश्ववर्ति मनुष्योने जैनधर्मनो लाभ आपवा माटे सर्व देशोमां सर्व जातना मनुष्योनी आगळ जैनधर्मना सदुपदेशोने रजु करवा जोइए अने कीडीने कण हाथीने मण ए न्याय प्रमाणे जैनधर्ममांथी कीडी जेटली शक्तिवाळा अल्पधर्म अंगीकार करी शके छे अने विशेष शक्तिवाळा जैनधर्म अवबोधीने विशेष धर्म ग्रही शके छे। जैनधर्म सर्वमनुष्योने पोतपोतानी शक्ति प्रमाणे श्रुतधर्म अने चारित्यधर्म ग्रहणसंबंधी उपदेश करे छे।

व्यक्तिस्वातंत्र्य, बुद्धिस्वातंत्र्य, आचारस्वातंत्र्य, संघस्वातंत्र्य, अभिप्रायस्वातंत्र्य वगेरे नाना प्रकारना स्वातंत्र्योनी जे जे अंशे आवश्यकता जे जे नयदृष्टिए घटे छे, तेनो स्वीकार प्रचार करावनार जैनधर्म छे। अतएव व्यक्ति आदि स्वातंत्र्यथी ते ठेठ परमात्म स्वातंत्र्य सुधीनो जाहेर घोष करनार अने सर्व प्रकारनी दुःखदशारूप परतंत्रतानी बेडीमांथी मुक्त करीने वास्तविक स्वातंत्र्य समर्पनार जैनधर्म होवाथी तेना उदारतत्त्वादि विचारोनो विश्वमां सर्वत्र फेलावो करवो जोइए। जगतमां पारतंत्र्य त्याज्य छे अने कयुं पारतंत्र्य क्यां सुधी कोने केवा द्रव्यादि भावे आदरवा लायक छे, तेनो विवेक करावीने सद्गुणोने उत्पन्न करनार करावनार एवा व्यावहारिक तथा धार्मिक पारतंत्र्यनी उपयोगिता अने आदेयता शिखवनार तथा तेमां प्रवर्त्तावनार जैनधर्म होवाथी जैनधर्मनो सर्वत्र फेलावो करवानी जरूर छे।

वास्तविक सुखप्रद एवुं वास्तविक स्वातंत्र्य तथा वास्तविक पारतंत्र्यनी दशा दर्शावनार जैनधर्म होवाथी ते विश्वव्यापकधर्मनी योग्यता धराववा समर्थ थाय छे। दया, सत्य, शुद्धप्रेम, मैत्रीभावना, करूणाभावना, माध्यस्थ्य, प्रमोदभावना, गुणानुराग, व्यसनत्यागता, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, परिग्रहपरिमाण, समभाव, शान्ति, दान अने सेवा वगेरे धर्मो सर्व देशमां सर्व मनुष्योने आदरवा लायक होवाथी अने सर्वदेशना सर्व मनुष्योनी व्यावहारिक तथा धार्मिक उन्नति करनार होवाथी तेओ विश्वव्यापक गुणधर्मो कहेवाय छे।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

एवा विश्वव्यापक दयादि गुणो एज जैनधर्म होवाथी जैनधर्म ए विश्वव्यापक धर्म थवानी योग्यतावाळो होवाथी जैनधर्मने विश्वव्यापक करवा सर्व देशना सर्व साक्षर महात्माओए लक्ष आपीने उदार भावथी तेनो फेलावो करवो जोइए।

श्री वीरप्रभुए उपदेशेला नवतत्त्व अने षड्द्रव्योमां विश्ववर्त्ति सर्व पदार्थोनो समावेश थाय छे। विश्वमां एवो कोइ पदार्थ नथी के जेनो षड्द्रव्य वा नवतत्त्वोमां समावेश न थतो होय। तत्त्वने तत्त्वरूप जोवानी शक्ति ज्यारे आत्मामां प्रगटे छे, त्यारे मनुष्यने आत्मज्ञान प्राप्त थाय छे। अस्ति अने नास्ति आदि धर्मो वडे जे आत्माने जाणे छे, ते सर्वने जाणे छे। अतएव आगममां कह्युं छे के -

एगं जाणइ सो सव्वं जाणइ, जे सव्वं जाणइ ते एगं जाणइ।

एको भावः सर्वथा येन दृष्टः, सर्वे भावाः सर्वथा तेन दृष्टाः ॥

सर्वे भावाः सर्वथा येन दृष्टाः, एको भावः सर्वथा तेन दृष्टः ॥

इत्यादि आप्त प्रमाणोथी अवबोधाय छे के, जो द्रव्य, क्षेत्र, काल अने भावथी स्व अने परनी अपेक्षाए आत्माने जाणवामां आवे तो आत्मज्ञाननी प्राप्ति थाय छे। आत्मज्ञाननी प्राप्ति पश्चात् द्वितीयचंद्रकलावत् आत्मगुणोनो आविर्भाव थाय छे। आत्मामां सत्ताए छता एवा अनंत गुणो छे, पण कर्मना योगे तेओनुं आच्छादन थवाथी आत्माना गुणो आत्मामां तिरोभावे रहे छे अने ज्यारे जे जे अंशे कर्मावरण टळे छे, ते ते अंशे आत्माना गुणोनो आविर्भाव थयो एम त्यारे कहेवाय छे। कर्म ए जड पुद्गल द्रव्य स्कंधरूप छे।

जड अने चेतन ए बे द्रव्योमां सर्वद्रव्योनो समावेश थाय छे। कर्म अनादिकालथी आत्माने लाग्युं छे। कर्मनो कर्त्ता आत्मा छे। राग-द्वेषादि परभाव अशुद्ध परिणामे आत्मा कर्मनो कर्त्ता बने छे अने रागादि परिणामना नाशपूर्वक ज्ञान, दर्शन अने चारित्रादि स्वभाव गुणोए परिणाम पामेलो आत्मा कर्मनो हर्त्ता बने छे।

आ प्रमाणे आत्मा अने कर्मनो संबंध अनादिकाळथी छे, पण चारित्रभावे कर्मनो नाश थवाथी आत्मा मुक्त थाय छे। आत्मा तेज परमात्मा सिद्ध-बुद्ध बने छे। अनन्तकर्म टळवाथी आत्मामां अनन्तगुण खीले छे। कर्म अनादि सान्त अने अनादि अनन्त छे। भव्य जीवोनी अपेक्षाए अनादि सान्त छे अने अभव्य जीवोनी अपेक्षाए अनादि अनन्त छे। जैनो कर्मने वास्तविक जड पदार्थ माने छे। जैनधर्म एम जाहेर करे छे के, विश्वना सर्व मनुष्योने कर्मना दोषोथी मुक्त करीने तेओने अनन्तसुख आपवानो मार्ग दर्शावुं छुं, माटे मारो सर्वत्र विश्वमां फेलावो करवानी जरूर छे।

क्रमशः

धार्मिक गद्य संग्रह भाग – १, पृष्ठ –६८८-६९०

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

Awakening

Acharya Padmasagarsuri

(from past issue...)

Wise people always use their power of speech in the right manner. They do not speak the truth that harms others. They may even utter a lie that helps somebody. They know that the welfare of humanity is the main objective of speech. A wise man always acts according to this sukti (epigram):

सत्यं ब्रूयात् प्रियं ब्रूयात् । न ब्रूयात् सत्यमप्रियम् ॥

Satyam bruyat, priyam bruyat Na bruyat sathyamapriyam ॥

Speak the truth; but speak the truth that is helpful and agreeable to others. Do not speak the truth that is disagreeable or harmful, this is an eternal principle of conduct (Dharma).

Benevolence

Benevolence or helping others is the greatest duty or dharma; and this is the essence of all Shastras and scriptures.

A great scholar came to the palace of a king to deliver spiritual discourses; and he brought with him a cart laden with crores of Dharma Shastras or sciptural texts. The king said to him, “I do not have time to sit hearing discourses for hours together. Explain to me in one minute whatever you can impart to me”.

On hearing this, the scholar said, “Please listen, I will explain to you in half a stanza what crores of scriptural texts say. Benevolence brings merit; and harming others begets sin. This is the essence of all sacred texts.”

Immensely pleased with this profoundly meaningful and pithy reply, the king.

honoured him by giving him appropriate gifts, This story illustrates the greatness of magnanimity.

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

Even if we are in adverse circumstances on account of some inauspicious actions, we should not turn away from the path of benevolence. After we do some auspicious actions, favourable circumstances will surely appear.

Love which inspires benevolence has disappeared today on account of mutual mistrust. If we do not help others, how can we hope for help from others?

The body and wealth are not the only means by which we can render help to others. Of course, by using our bodily strength and wealth, we can help others, but, they are not the only means. We can render help to others by word as well as deed. Sweet words bring about cheerfulness and happiness, while harsh and unkind words bring about unpleasantness and sorrow. It is said:

"If one word which is properly understood (If its meaning is properly understood before it is uttered) is spoken at the right time in the right manner, it can fulfil our desires in this world and in the other world." A man learns the speech and language of the company which he keeps. The parrot that is brought up in the ashram of a Sanyasi speaks in a sweet and disciplined manner; on the other hand, the parrot that is brought up in the slaughter-house of a butcher utters unpleasant and unclean words. A parrot said to a king:

अहं मुनीनां वचनं शृणोमि गवाशनानां स शृणोति वाक्यम् ।
न चास्य दोषो न च सद्गुणो वा संसर्गजा दोषगुणा भवन्ति ॥

Aham Muneenam vachanam shrunomi
Gavashananam sa shrunothi vakyam ।
Nachasya dosho na cha sadguno va
Samsargaja dosha guna bhavanthi ॥

"I hear the words of ascetics and that parrot hears the words of butchers who eat beef. It is not a fault of that bird (if it speaks bad language). It is not a merit in me (if I speak good language). Merits and defects arise from our company.

(continue...)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अनेकार्थशब्दसन्दब्ध केटलीक अप्रगट कृतिओ

गणि सुयशचंद्र-सुजसचंद्रविजयजी

भारतीय सर्व भाषाओमां सौथी श्रेष्ठ अने प्रौढ भाषा संस्कृत छे। तेनो शब्दकोश विशाल छे। अने तेमां रचायेल साहित्य अढळक छे। व्याकरणना नियमोथी सुग्रथित होवाथी अने बीजी भाषाओ करतां प्रमाणमां क्लिष्ट होवाथी आ भाषा विद्वज्जनोमां वधु प्रीतिपात्र थइ अने तेमना थकी विशेष प्रचार-प्रसार पामी। जैन विद्वानो पण आ देवभाषाथी आकर्षित रह्यां । तेथी तेमना आगमादि सिद्धांतग्रंथो प्राकृत भाषामां होवा छतां अने सामान्य जनसमूहमां बोलाती भाषा पण प्राकृत होवा छतां तेमणे आ भाषाना व्यापमां विशेष सहयोग कर्यो। अने पोतानी सुंदर-ललित रचनाओथी तेने वधु समृद्ध करी। एम कही शकाय के- 'वर्तमान प्राप्त साहित्यमां संस्कृतभाषा निबद्ध रचनाओनुं जो वर्गीकरण थाय तो जनसंख्याथी जैनो अल्पसंख्यक होवा छतां जैन साहित्य जैनेतर साहित्यनी बराबरी करी शके तेटलुं विशाळ छे।'

संस्कृतना भाषाशास्त्रीय अध्ययनना आधारे एवुं पण जाणवा मळे छे के- 'संस्कृतमां शब्दकोशमां एक ज वस्तु/अर्थना जेटला पर्यायवाची शब्द थइ शके छे ते वस्तुना/अर्थना तेटला पर्यायवाला शब्द बीजी कोइ भाषामां प्राप्त थता नथी' - संस्कृतनी आ एक विलक्षणता छे।'

संस्कृतनी आ ज भाषाकीय विशेषतानो लाभ लइ अनेक जैन-जैनेतर विद्वानोए (१) एक ज शब्द (२) एक ज वाक्य के चरण (३) एक ज श्लोकना एकाधिक अर्थो धरावती रचनाओनुं सर्जन कर्युं छे। आ रचनाओ अनेकार्थक रचनाओ तरीके ओळखाय छे। आम जोइए तो आवी कृतिओ सर्जक कविना कोशज्ञान-व्याकरण प्रभुत्व तथा बौद्धिकक्षमता (विचारशक्ति)नी परिचायक थइ पडे छे। काव्यत्वनी दृष्टिए आवा काव्योमां रसालता अने भव्यता प्रायः ओछी जोवा मळे छे।

एक ज श्लोकना एकाधिक अर्थो धरावती रचनाओमां मुख्यतया 'द्विसंधान काव्य' थी 'चतुर्विंशतिसन्धान काव्य' सुधीना काव्यो तथा 'द्व्याश्रयकाव्यो' प्राप्त थाय छे। ते सिवाय छूटा-छवायां 'या माता ममता माया०', 'चतारि-अट्ठ-दस-दोय०', 'दोस सय मूल जालं०' 'नमो दुर्वाररागादि०' जेवा सेंकडो पद्यो तेमज महाकाव्यना श्लोको प्राप्त थाय छे।

ते ज रीते एक ज वाक्य/चरणना एकाधिक अर्थो धरावती रचनाओमां मुख्यतया 'पादपूर्तिकाव्यो' मुख्य गणाय छे। ते सिवाय-'नालिकेर समाकाराः', 'राजा नो ददते सौख्यम्।' जेवा फूटकर काव्यचरणो पण प्राप्त थाय छे।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अने छेल्ली त्रीजा प्रकारनी एटले 'एक ज पदना एकाधिक अर्थो धरावती रचनाओनी वात करीए तो तेमां २ वर्ग छे। (A) कोशगत अर्थभेदथी ज पदना अनेकार्थवाळी कृतिओ (B) सभंग अभंग श्लेष/स्वर/व्यंजनव्यत्यय आदिनी सहायथी करेल एकाधिक अर्थवाळी कृतिओ। आ प्रकारनी रचनाओ केटलीक वार एटली दुर्बोध होय छे के रचनाकार के तेवो अन्य कोई विद्वान ग्रंथ उपर प्रकाश करे तो कृति समजाय। आवी बंने प्रकारनी प्राप्त रचनाओनी संख्या ३० थी वधु छे। जेनी नोंध अमे पाछळ मूकी छे। हजी ज्ञानभंडारोमां संशोधकनी राह जोती हशे ते जुदी। प्राप्त अप्रगट रचनाओमां 'श्रीनयविमल' कृत 'श्रीशंखेश्वरपार्श्वनाथस्तवः' 'अजितजिनस्तवनम्' 'श्रीविवेकसागर' कृत 'वीतरागस्तवनम्' जेवी रचनाओ (A) प्रथम प्रकारनी छे। ज्यारे 'श्रीसाधुरत्न(सूरि)' कृत 'वीतरागशब्दस्य षष्ठिरर्थाः', 'श्रीहंसविजय' कृत 'नेमिस्तवनम्', 'श्रीवीरदेवमुनि' कृत 'समवसरणस्थित-चतुर्मुखश्रीमहावीरस्तवः', 'श्रीसर्वविजयगणि' कृत 'पुण्डरीकपदशतार्थी' जेवी रचनाओ (B) प्रकारमां समाविष्ट थाय छे।

संस्कृत रचनाओ पछीना समयमां गुर्जरभाषाने पण आवी कृतिओए समृद्ध करी, जेमां शुभवीरकवि कृत 'विमलजिनस्तवन', 'अज्ञातकवि' कृत 'चसिमा-शब्द अर्थ सहित स्वाध्याय' जेवी कृतिओ प्राप्त छे। अहीं तेवी अनेकार्थक ६ कृतिओ प्रकाशित करी छे। कृति अने कृतिकारनो परिचय नीचे मुजब छे।

(१) श्रीनेमिनाथस्तवनम्

'वसन्ततिलका' छंदना २७ पद्योमां स्वगुरुना नामना आद्यपद 'कमल' ने १०८ वार प्रयोजी कविए अहीं प्रभुस्तवना करी छे। साथे कृतिकारे ज पद्यना अर्थोने खोली आपती टीका पण रची छे। घणुं करीने आ कृति कविए गुरु म.ना कालधर्म पछी रची छे। कृतिलेखन रचना नजीकनुं तेमज कर्ताना गुरुभाई कीर्तिविजयजीनुं होई शुद्ध छे।

कृतिकार श्रीहेमविजयजी तपा० श्रीमुनिसुंदरसूरिजी म.सा.नी परंपराना उद्भट विद्वान अने शीघ्रकवि हता। जगद्गुरु श्रीहीरविजयसूरिजी सं.१६३९ मां ज्यारे फतेहपुर सिक्रि पधार्या त्यारे तेओ तेमनी साथे हता। तेमणे 'पार्श्वनाथचरित्र' 'ऋषभशतक' 'स्तुतित्रिदशतरंगिणी' 'कीर्तिकल्लोलिनी' 'पं.श्रीकमलविजयगणि रास' 'कथारत्नाकर' प्रमुख अनेक रचनाओ करी छे। सं.१६८७ मां इडर मुकामे तेओश्री कालधर्म पाम्या हता।

संपादनार्थे प्रस्तुत कृतिनी हस्तप्रत अमोने शेठ श्री शांतिलाल मणिलाल संघवी संग्रहित शेठ मणिलाल पीतांबरदास हस्तलिखित शास्त्रसंग्रहमांथी प्राप्त करावी आपवा बदल तें भंडारना ट्रष्टीगणनो, खंभात-अमरशाळा ज्ञानभंडारना व्यवस्थापकनो

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तथा प्रो. कीर्तिभाईनो खूब खूब आभार।

कृतिमां आवतां शब्दोना केटलाक संदर्भ अमें अन्य कोशादिमांथी मेळवी चोरस ब्रेकेटमां नोंध्या छे। समयाभावे योग्य साहित्य उपलब्ध न होवा आदि कारणे घणी जग्याए संदर्भ आपवा रही गया छे।

श्रीहेमविजयविरचितं स्वोपज्ञसटीकम्

अष्टोत्तरशतकृत्वःसङ्कलितकमलशब्दगर्भितं श्रीनेमिनाथस्तवनम्

॥र्द०॥ ॐ नमः पं. श्रीकमलविजयगणिगुरुभ्यः ॥

ध्यात्वा गिरामधिपतेर्हृदि शारदायाः, पादद्वयं श्रुतमहोदधिपारदायाः।
संस्तौमि सिद्धिवियदिन्दु मितैः स्फुटोक्त्या, सन्दर्भितैः **कमल**जैर्जिननेमिमर्थैः ॥१॥

अव. शारदायाः पादद्वयं हृदि ध्यात्वा जिनं नेमिं सिद्धिवियदिन्दुमितैः-अष्टोत्तरशतप्रमितैः **कमलजैः**- कमलजातै**रर्थैः संस्तौमि** ॥१॥

सामोदमास्य**कमलं** जिन ! तावकीनं, कल्याणवल्लि**कमलं** तदहं स्मरामि।
यस्योक्तयो जगति स**त्कमला**करन्ति, पुण्याम्बुजेषु घनमङ्**कमलं** हरन्त्यः॥२॥

अव. हे **जिन ! सामोदं**- सहर्षं, सपरिमलं [वा] तत् **तावकीनं आस्यकमलमहं मनसि स्मरामि**। तत् किम् ? **यस्योक्तयः** - यद्वचांसि **पुण्याम्बुजेषु सत्कमलाकरन्ति**-शोभनतडा(टा)क इवाऽऽचरन्ति। उक्तयः कथम्भूताः ? **कल्याणवल्लिकमलं**-कल्याणलतासु कमलं-पानीयम्। उक्तयः किंकुर्वन्त्यः ? पापमलं हरन्त्यः, **अङ्कमेव**-कलङ्कमेव **मलं हरन्त्यः** ॥२॥

जेतुं ध्वनिः पि**कमलं** भवति स्म तेषां, गम्भीरता**कमल**राट्सदृशाशयानाम्।
ये श्रीलता**कमल**मुक्प्रतिमं गुणौघं, गायन्ति ते **कमल**भृत्कमनीयमीश ! ॥३॥

अव. तेषां ध्वनिः पिकं जेतुमलं भवति स्म - समर्थोऽभूत्। तेषां किं विशिष्टानाम् कमलराट्- सागरः, तेन सदृश आशयो येषां ते **कमलराट्सदृशाशयानाम्। ये** तव **गुणौघं गायन्ति**। गुणौघं किं विशिष्टम् ? **श्रीलतायां कमलमुक्**-मेघः, तेन प्रतिमम्। पुनः किं विशिष्टम् ? **कमलभृत्**-चन्द्र, तद्व**त्कमनीयम्** ॥३॥

यद्धाम्नि ताव**कमल**ङ्घ्यवचःप्रपञ्च !, पत्पांसुपेट**कमल**ङ्कृतिरत्र जज्ञे।
भाति स्म तत्र **कमलं** जलधाविवोच्चैः, सर्वं प्रभूत**कमलं** सुधयाऽभिरामे ॥४॥

अव. अलङ्घ्यः - अनभिभवनीयः **वचःप्रपञ्चः** यस्य, तत्सम्बोधनम्। हे देव !

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

यद्धाम्नि तावकं पत्पांसुपेटकं-पदरजोवृन्दम् **अलङ्कृतिः** - आभरणं **जज्ञे**। **तत्र कं**-सुखम् **अलं** – भृशं **भाति स्म, इव**-यथा **जलधौ कं**-जलम्। कं किम्भूतम् ? **प्रभूता कमला यत्र** तत् ॥४॥

त्वन्नाम राम**कमलं** भवभीरुजासु, ध्यायन्ति ये दलितशो**कमलङ्गि**तोषम्।
तेषां मुखं मुदितलो**कमल**ञ्चकार, श्रेयस्विनी **कमल**भूतनया नितान्तम्॥५॥

अव. हे जिन ! **ये** जना**स्त्वन्नाम ध्यायन्ति**। त्वन्नाम किम्भूतम् ? **रामकमलं**-मनोहरभेषजम्, यदनेकार्थसङ्ग्रहे- 'कमलं क्लोम्नि भेषजे' [.....]। **भवभीरुजासु**-संसारभयरोगेषु। **दलितः शोको** येन तत्। **अलङ्गिनः** - साधवः, तेषां **तोषो** यस्मात्, 'लङ्गः सङ्गे' [अने. संग्र. द्वि. काण्ड. श्लो.४५]। **तेषां मुखं कमलभूतनया**-सरस्वती **अलञ्चकार**। मुखं किं विशिष्टम् ? **मुदितो लोको** येन तत् ॥५॥

श्रीसूतरः**कमल**लक्ष्मभृदाऽऽधियुद्ध-ध्वान्तप्रथा**कमल**मित्र ! पवित्रनेत्र !
धर्मोर्मिम**त्कमल**राड् ! यदुवंशरत्न !, कः प्राप्य नाऽङ्**कमल**सत् ? तव देव ! पुण्यम्॥६॥

अव. श्रीसूतरसि-स्मरबले **कमललक्ष्मभृद्**–ईश्वरः, तत्सम्बोधनम्, कमलः-मृगः, तल्लक्ष्मा चन्द्रः, तद्भृद् महेशः। **आधियुद्धध्वान्तप्रथायां कमलमित्र**-रविः, तत्सम्बोधनम्। **धर्मोर्मिमति**-सुकृतसमुद्रे **कमलराड्**- वरुणः, तत्सम्बोधनम्। सहिनीरपतिरिति(?)। जलयादःपतिरिति(?) वचनात् [ ]। हे **यदुवंशरत्न** ! हे जिन! **तवाऽङ्कम्**-उत्संङ्गं **प्राप्य कः** पुमान् **नाऽलसत्**- न शुशुभे ? ॥६॥

कीर्तेः कदम्ब**कमलं** जितशारदीन-राकामृगाङ्**कमल**पत् तव यः प्रमोदात्।
तत्पादयोः **कमल**गद् द्युसदां किरीट –रत्नौघक्लृप्त**कमल**भ्यतमप्रणामम्॥७॥

अव. हे जिन! **कीर्तेः कदम्बकं, अल**मित्यवधारणे, तेन(?) तव कीर्तिसमूहमेव **यः पुमान् [जितशारदीन राकामृगाङ्कम्] अलपत्**-वदति स्म, **तत्पादयोः द्युसदां कं**-मस्तक**मलगत्,** 'कं-शीर्षे' [अने. सं. का. १ श्लो. ५], लगि(गे) सङ्गे-[सिद्धहेम. धातु. १०२४]। कं किम्भुतम् ? **किरीटरत्नौघैः क्लृप्तः कः**-प्रकाशो येन तत्, कः प्रकाशे [ ] ॥७॥

सम्प्रीतशक्र**कमलं** गुणगीतमत्र, शृण्वन्ति येऽङ्**कमल**यं भवदीयमस्यत्।
ऐच्छत् सद**ङ्कमल**सक्षितिरंह्रियुग्मं, नन्तुं नखास्त**कमलं** जनता तदीयम्॥८॥

अव. हे जिन ! **ये** जनाः **भवदीयं गुणगीतं शृण्वन्ति**। गुणगीतं किम्भूतम्? **सम्प्रीताः** - सम्यक् प्रीणिताः **शक्रस्य कमलाः** –वरनार्यो येन तत्, 'कमला

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्रीवरनार्योः [ ]। पुनः गुणगीतं किं कुर्वत् ? **अस्यत्**- निराकुर्वत्। किम् ? **अङ्कं**-पातकम्। **अङ्कं** किम्भूतम् ? **न** विद्यते **लयः**-विलासो यत्र तत्, 'लयो विलासे [ ]। **सत्**- शोभनः **अङ्कः**-भूषा यस्य तत्। **तदीयमंह्रियुग्मं नन्तुं जनता ऐच्छत्।** जनता किं कुर्वती ? **अलसस्य**- तन्द्रायाः **क्षितिर्**यस्यां सा। अंह्रियुग्मं किं विशिष्टम् ? **नखैरस्तं कमलं**-ताम्रं येन तत्, कमलं ताम्रे [ ] ॥८॥

भावारिभे**कमल**कापतिवन्द्य ! पाहि, मां मुक्तियाच**कमल**ञ्छितकाय ! स त्वम्।
यद् वाग्भिरस्त**कमला**तनुभूविकारं, स्त्रीमण्डलं दलितक**ल्कमल**ङ्कमासीत् ॥९॥

अव. मां कथम्भूतम् ? **भावारिभ्यो भेकं**- भीरुम्, 'भेकं कातरे' [ ]। **अलकापतिः**-श्रीदः, तेन **वन्द्यः,** तत्सम्बोधनम्। **अलञ्छितः**-अकलङ्कः **कायो** यस्य, तत्सम्बोधनम्। हे जिन ! **स त्वं मां पाहि**। **यस्य वाग्भिः स्त्रीमण्डलं**- स्त्रैण**मासीत्**। **अस्तः कमलातनुभुवः** - स्मरस्य **विकारो** येन तत्। **दलितः कल्कः** - दम्भो येन [तत्], 'कल्को दम्भे' [ ]। **न** विद्यते **लङ्का**-स्वैरिणी यत्र तत्, 'लङ्का-कुलटा' [ ] ॥९॥

ध्यानं तवाऽन**कमल**क्ष्मधियां तदर्हं, स्तान्मे सदम्ब**क ! मल**त्वविमुक्तचित्त! ।
दत्ते यद**ङ्कमल**मुक्तपदं सदर्प-कन्दर्पसर्पदलने **कमल**क्ष्मपुंसाम् ॥१०॥

अव. हे जिन ! **तत् तव ध्यानं मम स्यात्**। ध्यानं किं विशिष्टम् ? **अनकं**-निष्पापम्। पुनः किम्भूतम् ? **अर्हं**-योग्यम्। केषाम् ? **अलक्ष्मधियाम्**-अकलङ्कमतीनाम्। **सती**- रम्ये **अम्बके**-लोचने यस्य, तत्सम्बोधनम्। **मलत्वेन**-कार्पण्येन **विमुक्तं चित्तं** यस्य, तत्समाबोधनम्, 'मलः कदर्यः'[ ], **अङ्कमलेन मुक्तं पदं यद् दत्ते**। ध्यानं किं विशिष्टम् ? **सदर्पकन्दर्पसर्पदलने कं**-मयूरम्, 'कःकलापिनि' [ ]। **अलक्ष्मपुसां**-निष्कपटनराणाम् ॥१०॥

त्वां नीरजा**ङ्कमल**सः कथमीश ! वेत्ति ?, कर्मद्रुदाह**कमल**भ्यभवावतारम्।
यं पेशलांश**कमलं** मनसि स्मरन्ति, ज्ञानोर्मिमद्व**कमल**ब्धिनिधिं मुनीन्द्राः ॥११॥

अव. हे **ईश** ! **अलसः**-मन्दः पुमां**स्त्वां कथं वेत्ति? कर्मद्रुदाहे कः**-वह्निः, 'तत्सम्बोधनम्[1] 'कोऽग्नौ'[ ]। **अलभ्यः**- अप्राप्यो **भया(वा)वतारः** यस्य तम्। **पेशलांशं**-रम्यभागं[**कमलं**]-हृदयस्यदक्षिणेपार्श्वेतिलकोयस्यतम्,'कमलंक्लोम्नि'[ ]। **ज्ञानोर्मिमद्वके म** इव –चन्द्र इव या **लब्धयः,** तासां निधिः, [तम्], 'मः शशिनि' [ ] ॥११॥

1. 'तत्सम्बोधनम्' इत्यस्य स्थाने 'तम्' इति पाठो योग्यः।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्रोत्फुल्लपद्म**कमल**ङ्घत शत्रुसार्थ-स्तं किं सुमोदि**कमल**क्ष्मणमुख्यमीश ! ।
स्फूर्जत्विवे**कमल**भत् सततं भवन्तं, सुखस्व**कमल**क्ष्मिलताहिमं यः[1] ॥१२॥

अव. प्रोत्फुल्लपद्म इव **कः** - मुखः(खं) यस्य तम्, 'को मुखे' [ ]। **सुमोदिका मा** - श्रीर्येषामीदृशा ये **लक्ष्मणाः** - धनिनः, तेषां **मुख्यं** तं नरं **शत्रुसार्थः किं अलङ्घत ?** - अभिभवति स्म, 'लघुङ् गतौ' [सिद्धहेम. धातु. ६३८]। **यो भवन्तं** ध्येयम**लभत्** - प्राप्नोति स्म, 'डुलभिंष् प्राप्तौ' [सिद्धहेम. धातु. ७८६]। भवन्तं कथम्भूतम् ? **सुखं स्वकं** यस्य तम्। **अलक्ष्मिलतायां हिमम्** । [पुनःकथम्भूतम् ? **स्फुर्जत्विवेकम्**] ॥१२॥

रुपश्रियाऽस्तमकराङ्**कमला**भमन्यु-ध्वंसवृषाङ्**कमल**वच्छिदमेनमीडे ।
अप्युग्रधीर्य**कमल**ञ्जदनादिमोह- दस्युः प्रवे**कमल**लाममना मनाग् न ॥१३॥

अव. एनं जिनमहमीडे। एनं किम्भूतम्? **अलाभ** एव **मन्युः**- क्रतुः, तस्य **ध्वंसे वृषाङ्कः** - शिवः, तम्। पुनः [किम्भूतम् ?] **अलवच्छिदम्**- अविलासनाशकम्, 'लवो विलासे' [ ]। **यकमुग्रधीरपि अनादि-मोहदस्युः नाऽलज्जत्**- न भर्त्स्यते स्म, 'लजु भर्त्सने' (सिद्धहेम. धातु. १५५)। मोहदस्युः-कथम्भूतः? **अलल्लामम्**- अप्रधानं **मनो** यस्य सः, ललामं प्रधानं ' [ ] ॥१३॥

निर्दर्प दर्प**कमल**क्षण! लक्षणीयं, त्वद्वक्त्रमत्र हरिणाङ्**कमल**क्षयद् यः ।
चिन्नीरजाङ्**कमल**वप्रणयोर्मिरम्यं, तस्याऽतिरे**कमल**डद् हृदयाब्धितोयम् ॥१४॥

अव. दर्पके मः-चन्द्रो **लक्षणं**-चिह्नं यस्येदृशो हरः, तत्सम्बोधनम्। **यस्त्वद्वक्त्रं हरिणाङ्कम् अलक्षयत्**- पश्यति स्म, 'लक्षीण् दर्शनाङ्क[न]योः' [सिद्धहेम. धातु. १७१९]। **तस्य हृदयाब्धितोयमलडत्**- विलसति स्म, 'लड् विलासे' [सिद्धहेम. धातु. २५४]। तोयं किं विशिष्टम् ? **चिदेव**-ज्ञानमेव **नीरजाङ्कः** – कृष्णो यत्र [तत्]। **अलवेषु**-महत्सु यः **प्रणयः**, स **एवोर्मयः**, तैः **रम्यम्**।

ये त्वामपात**कमल**न्त्यपरैरमर्त्यै-र्यच्छद्भिरत्र **कमलं** न इदं वदन्तः ।
हृद्धाम्नि सिद्धय**कमल**न्त्यघमाविशत् ते, साम्याम्बुमुक् **कमल**लामललाममाऽऽशु ॥१५॥

अव. 'कं-सुखं **यच्छद्भिरपरैरमर्त्यैर्नः**-अस्माक**मलं**-पर्याप्तम्'- **इदं वदन्तो ये त्वामपातकम् अलन्ति**-भूषयन्ति, 'अली भूषण-पर्याप्ति-वारणेषु' [सिद्धहेम. धातु. ९१९], **ते** पुरुषाः **हृद्धाम्नि आविशत्**(द्) **अघमलन्ति**- वारयन्ति। अघं किम्भूतम्?

1. अत्र चतुर्थचरणे द्वौ वर्णौ लेखनदोषेन च्युतौ भवेताम्।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अकम्-अमित्रम्, 'को मित्रे' [ ]। पुनः किम्भूतम्? **साम्याम्बुमुक्**- समताघनः, तत्र **कं**- वायुम्, 'को मरुति'[ ]। पुनः किम्भूतम्? **अललामम्**-अरम्यं **ललामं**-चिह्नं यस्य तत् ॥१५॥

योऽङ्गी तवाऽन्ति**कमल**ङ्गदपारपुण्यं, सन्तुष्टलो**कमल**घुप्रतिभाप्रकाश ! ।
सम्यक् सुत**र्कमल**घुं लघु मार्गमर्त्ति-कक्षैकपाव**कमल**क्षयतै(दे)ष मुक्तेः ॥१६॥

अव. यः अङ्गी-प्राणी **तवाऽन्तिकं**-समीपम**लङ्गत्**-याति स्म, 'लगु गतौ' [सिद्धहेम. धातु. ७९]। **अलघुः** - महान् **प्रतिभायाः** - बुद्धे **प्रकाशो** यस्य, तत् सम्बोधनम्। **अलघुं**-सारं मुक्तेर्मार्गमेष **लघु** - द्रुतम**लक्षयत्** -अभिजानीते स्म, 'लक्षिण् आलोचने' [सिद्धहेम. धातु. १८१५] ॥१६॥

यो मङ्क्षु मस्त**कमल**क्षयदानतं त्वत्-पत्पांसुभिर्निजमभी**कमल**ङ्गमूर्च्छ! ।
श्रेयःशशाङ्कम ! लताञ्जनपुष्पमञ्जो !, सोऽप्राप्यपाट**कमल**ङ्घदघौघपङ्कम् ॥१७॥

अव. यो नरो निजं **मस्तकं त्वत्पत्पांसुभिरलक्षयत्**-अङ्कयति स्म। मस्तकं किं विशिष्टम् ? **अभीकं**-कम्रम्, 'अभीकं कम्रे' [ ]। न विद्य**तेलङ्गे** - परिग्रहे **मूर्छा** यस्य, तत्सम्बोधनम्। **श्रेयःशशाङ्के मः** - शम्भुः, तत्सम्बोधनम्, 'मः शिवे' [ ] । **लताञ्जनपुञ्जवत्**-फलिनीकज्जलवृन्दव**न्मञ्जुः**, तत्सम्बोधनम् । **स अघौघपङ्कमलघत्**-शोषयामास, 'लघु शोषणे' (सिद्धहेम. धातु.९८)। **अप्राप्यः पाटकः** - रोधस्तटं यस्य तम् ॥१७॥

मत्त्वाऽनली**कमल**जत् तव शासनं यः, पुण्ये पथि प्रियमश**ङ्कमल**ग्नदोषे ।
नन्तुं सुशू**कमल**ति स्म तमद्रिभिन्मुद-वल्लीबलाहकमशो**कमल**ब्धिमुक्तम् ॥१८॥

अव. यस्तव शासनमनलीकं-सत्यं **मत्त्वा पुण्ये पथि अलजत्**-ययौ, 'लज गतौ' [सिद्धहेम. धातु. ....(?)]। शासनं किं विशिष्टम्? **अशङ्कं**-निःसंशयम्। पथि किं विशिष्टे ? **अलग्नाः** - असक्ता **दोषा** यस्मिन्, 'लग्नं सक्ते' [ ]। **तं नन्तुमद्रिभित् –शक्रोऽलति स्म** – उद्यमं व्यधात्, अड उद्यमे [सिद्धहेम. धातु. २५३] डलयोरैक्यम्। तं किं विशिष्टम्? **सुशूकं**-शोभनरूपम्। **अलब्धयः**- ज्ञानादीनामप्राप्तयः, ताभि**र्मुक्तम्** ॥१८॥

श्लोकं सकृज्जितशशा**ङ्कमल**ब्धसौस्थ्यः, संहृष्टकौशि**कमल**म्भत तावकं यः ।
राज्याभिषे**कमल**षत् त्रिजगत् तदीयं, कर्तुं श्रियै**कमल**कैर्मृजयत् तदंह्री ॥१९॥

अव. हे जिन ! **अलब्धम्**- अप्राप्तं **दौ(सौ)स्थ्यं** येन, इदृशो **यः** पुमां**स्तावकं** श्लोकं-यशः **अलम्भत** - जगौ, 'लभुङ् शब्दे' [सिद्धहेम. धातु. ७७८]। श्लोकं

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कथम्भूतम्? **संहृष्टः कौशिकः**- शक्रो येन तम्। **तदंह्री अलकैर्मृजयत् त्रिजगत् तदीयं राज्याभिषेकं कर्तुमलषत्**- वाञ्छति स्म, 'लषी कान्तौ' [सिद्धहेम. धातु. ९२७] । **श्रिया** -विभूत्या **एकं**- श्रेष्ठम्, 'एकं श्रेष्ठे' [ ] ॥१९॥

हित्वाऽतिभावु**कमल**ङ्घत तावकोक्त-मन्यत्र बोध**कमल**ध्वसुमत्प्रबर्हः ।
उद्वेगकार**कमल**म्बत लातुमोकः, स्वं हृत् स नार**कमल**ज्जविशामधीशः ॥२०॥

अव. हे स्वामिन् ! यः पुमां**स्तावकोक्तं हित्वाऽन्यत्र अलङ्घत**-गच्छति स्म, 'लघुङ् गतौ' [सिद्धहेम. धातु. ६३८]। तावकोक्तं किम्भूतम्? **अतिभावुकं** -प्रकामकल्याणम्। पुनः किं विशिष्टम्? **बोधकम्**। यः किम्भूतः? **अलघवः** येऽ**सुमतः,** तेषां **प्रबर्हः** - प्रधानः। **स नारकं**-नारकस्य **ओकः**-गृहं **लातुं स्वं हृद्**-मनः **अलम्बत**-लम्बते स्म, 'लबुङ् अवस्रंसने' [सिद्धहेम. धातु. ७६६]। स किं विशिष्टः? **अलज्जविशां**-निस्त्रपनराणां मध्येऽ**धीशः** ॥२०॥

सत्योक्तिमू**कमल**खत् पथि यत् तवोक्ते-वृंदं विशां कलितश**ङ्कमल**म्बदृग् न ।
सञ्जातत**र्कमल**लाममधोगतिस्त्री-सङ्गेन सा**कमल**सत् सुचिरं तदत्र ॥२१॥

अव. हे जिन! **यद् विशां**-नराणां **वृन्दं तवोक्तेः**-वचसः **पथि न अलखत्**-अगमत्, 'लख गतौ' [सिद्धहेम. धातु. ६९]। वृन्दं किं विशिष्टम्? **कलितशङ्कं**-श्रितभयम्। [पुनःकीदृशम्?] **अलम्बा**-अदीर्धा **दृग्**-दर्शनं यस्य तत्। वृन्दं किं विशिष्टम्?[1] **अधोगतिस्त्रीसङ्गेन साकं**-सार्द्ध**मलसत्**-चिक्रीड। 'लसत्(लस) क्रीडने' [सिद्धहेम. धातु. ५४३] । वृन्दं किं विशिष्टम्? **सञ्जाततर्कं**-प्राप्तसंशयम्, **अललामम्**-अशोभनम् ॥२१॥

कन्दर्पकंस**कमला**धिप ! निर्ममेऽत्र, त्वद्वाक्प्रदीप**कमलं** स्वमनोगृहं यः ।
ज्ञानं सदाऽधि**कमल**ञ्जयदस्य भूयो, मोहच्छिदोत्सु**कमल**क्ष्मपथान्धभानुः ॥२२॥

अव. हे जिन ! **यः** पुमान् **स्वमनोगृहं त्वद्वाक्प्रदीपकमलं**-तव वचनदीपघरं **निर्ममे,** 'मलि धारणे' [सिद्धहेम. धातु. ८१०]। **अस्याऽधिकं ज्ञानं भूयः**-प्रभूत**मलञ्जयत्** -प्रकाशं चकार 'लजुण् प्रकाशने' [सिद्धहेम. धातु. १८५८]। ज्ञानं किं विशिष्टम् ? **अलक्ष्म**-अप्रधानः **पन्थाः,** स एवाऽ**न्धः**- अन्धकारः, तत्र **भानुः** ॥२२॥

कीर्त्यस्तमौक्तिक**कमल**त्तरसोपमान- कामाङ्कुशं यदुकुला**र्क ! मल**प्रभावम् ।
रुग्ध्वस्तलोच**कमल**ञ्छनमुक्तिनुन्न- प्रत्यग्रपा**कमल**योद्भवमंसलांसम् ॥२३॥

अव. हे जिन ! **भवन्तमहं स्तुवे**। भवन्तं किं विशिष्टम् ? **कीर्तिभिरस्तानि**

1. 'वृन्दं किं विशिष्टम्?' इत्यस्य स्थाने 'तद् वृन्दं' इति पाठोऽपेक्षितः।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मौक्तिकानि येन । **अलक्तरसोपमाः** - यावकरसतुल्याः **कामाङ्कुशा** यस्य। **मः** - वेधाः, **लः**- शक्रः, तयोरिव **प्रभावो** यस्य तम्, 'मो विरञ्चौ' [ ] 'लो वज्रिणि' [ ]। **रुग्भिर्ध्वस्तः लोचकः**-कज्जलं येन तम्। **अलञ्छनं**-निष्कलङ्कम्। **उक्तिभिः** –वचनै**र्नुन्नः**-जितो **मलयोद्भवः**-चन्दनं येन तम् ॥२३॥ युग्मम् ॥

विश्वैकनाय**कमलम्**पटचित्तवृत्तिं, श्रीमन्नप**ङ्कम ! ल**घुश्वसितप्रसारम् ।
स्निह्यत्कनीनि**कमलर्**कमिवेष्टदाने, प्रह्वं स्तुवेऽणु**कमलङ्**गमहं भवन्तम् ॥२४॥

युग्मम् ॥

अव. अलम्पटा-विषयेष्वनातुरा **चित्तवृत्तिर्यस्य** तम्। हे **श्रीमन्! अपङ्का**-निष्पापा **मा**-माता यस्य, तत्सम्बोधनम्, 'मा मातृश्रियोः' [ ]। **लघु**वत्-अगरुवत् **श्वसितप्रसारः**-मुखवायुर्यस्य तम्, 'लघु अगु(ग)रु(:)' [ ]। **स्निह्यन्त्यौ कनीनिके** यस्य तम्। पुनः किं विशिष्टम्? **इष्टदाने प्रह्वम्।** कमिव? **अलर्कमिव**-श्वेतार्कमिव, 'अलर्को धवलार्के' [ ], श्वेतार्को हि वान्छितार्थकृद् भवतीति ख्याति(:)। **अणुकं**-दक्षम्। **अलङ्गम्** – अविटम्, 'लङ्गः षिङ्गे' [सिद्धहेम. धातु. (?)] ॥२४॥ युग्मम् ॥

क्लेशाब्धितार**कमलम्**बयदुज्ज्वलं त्वद्-वाक्यं कृपात्म**कमलग्**नमनाः पुमान् यः ।
सर्वो जनस्त**कमलञ्**जयदज्ञसञ्ज्ञं, पापप्ररूप**कमला**(ल)र्कमिवाऽतिनिन्द्यम् ॥२५॥

अव. यस्त्वद्वाक्यमलम्बयत्-चिक्षेप, 'ड(डि)बुण् क्षेपणे' [सिद्धहेम. धातु. १६७५], डलयोरैक्यम्। यः किं विशिष्टः ? **अलग्नम्** - अलज्जितं **मनो** यस्य स निस्त्रपमनाः,'लग्नं लज्जिते' [ ]। **सर्वो जनस्तकं**- तम् **अलर्क**मिव - सरोगश्वानमिवा**ऽतिनिन्द्यमलज्जयत्**-भाषते स्म, 'लजुण् भाषणे' [सिद्धहेम. धातु. १७७५] ॥२५॥

नित्यं तमे**कमलघुं** पथि पुण्यपूते, प्रावीण्यपेट**कमलङ्**घयदात्मवक्त्रे ।
........................,[1] वाचां चयं **कम! ल**तोपमकायगन्ध ! ॥२६॥

अव. तमेकं प्रावीण्यपेटकं- पाण्डित्यमञ्जुषा**मात्मवित्** – सुधी**र्ना**-पुमान**लङ्घयत्**-कथयति स्म, 'लघुण् भाषायाम्' [सिद्धहेम. धातु. १७६९.] । तं किं विशिष्टम्? **पुण्यपूते पथि अलघुं**-स्थिरम्। **य आत्मवक्त्रे तावकं वाचां चयमलम्पयत्**-एकीचकार,

1. अत्र श्लोकस्य तृतीयं चरणं लेखनदोषेन लिखितं नाऽस्ति। तत्र 'यो [देव!] तावकमलम्पयदात्मविन्ना' इति पाठः स्यात्।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

'ड(डि)पुण् सङ्घाते' [सिद्धहेम. धातु. १६३०], डलयोरैक्यम्। **कः** मृत्युः, तत्र **मः** - शम्भुः, तत्सम्बोधनम्। **लतोपमः**-कस्तूरीतूल्यः **कायगन्धो** यस्य, तत्सम्बोधनम् ॥२६॥

आस्तेऽकलङ्**क ! मल**यस्थिर ! यस्य चित्ते, त्वन्नाम स**त्कम! ल**तान्तरिवाऽलिबालः।
त्रैलोक्यदीप**कमल**म्भयताऽस्य सौख्यं, वेश्मन्यशेष**कमला**घववल्लिमूलम् ॥२७॥

अव. हे **अकलङ्क ! मलयः**-पर्वतविशेषः, तदवत् **स्थिरः**, तत्सम्बोधनम्। **सती**-शोभना **कस्य**-आत्मनो **मा**-श्रीः-ज्ञानादिगुणसम्पत्तिर्यस्य, तत्सम्बोधनम्। **लतान्तः**-माधवीमध्येऽ**लिबाल** इव **यस्य चित्ते त्वन्नामाऽऽस्ते, तस्य वेश्मनि अशेषकं**-सकलं **सौख्यमलम्भयत**-एकीबभूव,'ड(डि)म्भिण् सङ्घाते' [सिद्धहेम. धातु. १८३४], डलयोरैक्यम् । सौख्यं किम्भूतम्? **अलाघवं**-गौरवम्, तदेव **वल्लिः**, तस्या **मूलम्** ॥२७॥

आसीन्नखाङ्**कमल**पानतमंह्रियुग्मं, द्राक् ते सुरो**कमल**वश्रि यदीयमूर्ध्नि।
विश्वाङ्गिनन्द**कमला**भयदाप्तुमुच्चैः, स्वं शं स मौक्ति**कमलं** महनीयमूर्तिः ॥२८॥

अव. हे नाथ! **यस्य मूर्ध्नि तवांह्रियुग्मं जज्ञे**। अंह्रियुग्मं किं विशिष्टम्? **नखानामङ्कः**-भूषा यत्र तत्। पुनः किं विशिष्टम्? लम्-अमृतं पिबन्तीति लपाः-सुराः, न लपा **अलपाः**-असुराः, **तैरानतम्,** 'लपममृतम्' [ ]। पुनः किं विशिष्टम्? **सु**-शोभना **रोकाः**-अंशवो यस्य तद्, 'रोको मयूखे' [ ]। **अलवा**-अच्छिन्ना **श्री**र्यत्र तद्, 'लवः कालभिदि छिदि' [ ]।**मौक्तिकं**-मुक्तिसम्बन्धि**शं**-सुखमाप्तुं**स्वम्**–आत्मानम**लाभयत्**-प्रेरयामास,'लाभण् प्रेरणे' [सिद्धहेम. धातु. १८९२]। शं किं विशिष्टम्? न विद्यते लः - चलनं यस्य तत्, 'लश्चलने' [ ] ॥२८॥

दामेव यः स्तवनमेतदुदारवर्णं, स्फुर्जद्गुणश्रि**कमल**ग्रथितं सदर्थम्।
कण्ठस्थितं वितनुते तमुपैति सद्यः, श्रीरिद्ध**हेमविजय**प्रणयप्रकर्षा ॥२९॥

अव. दामेति वृत्तं सुबोधम्। **'कमलविजय(कमल)'** इति निजगुरुनामादिममक्षरत्रयं सुभगमष्टोत्तरशतवारं मन्त्रमिवाऽशठमना अपठम् ॥२९॥
इत्यष्टोत्तरकमलशब्दग्रथितस्य स्वोपज्ञश्री**नेमिनाथस्तवनस्याऽवचूरिः** सम्पूर्णा ॥

संवत् १६६३ वर्षे चैत्रमासे श्री**पत्तननगरे** सतीर्थ्य**कीर्तिविजय**गणिना लिखितः(ता) ॥ श्री गुरुनामग्रहणभक्त्येति ॥ भद्रं भूयात् ॥श्रीः ॥

॥ इत्यष्टोत्तरशतशःसङ्कलितकमलशब्दगर्भितं श्रीनेमिस्तवनं सम्पूर्णम् ।

॥श्रीपत्तननगरे ॥ सतीर्थ्यकीर्तिविजयगणिना लिखितः(तम्) ॥ संवत् १६६३ वर्षे ॥श्रीः ॥

(क्रमशः)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्री वीरविजयजी कृत

२० स्थानकतप स्तवन

उपेन्द्र डी. भट्ट

“तपः कर्म विनाशाय” भवभ्रमणना कारणरूप कर्मोना विनाशनुं प्रबळ साधन तप छे। तेमां पण विश्वना सर्वोत्कृष्ट तारक तीर्थंकर पद आपवानी ताकात धरावतुं तप एटले २० स्थानक तप। आ तप प्रत्येना विशेष आदरनुं दर्शन तेनी सेंकड़ो रचनाओ अने परंपराथी श्रीसंघमां चाली आवती आराधनामां थाय छे। आ तप संदर्भेनी अनेक रचनाओ प्रकाशित थई छे। छतां हजुये घणी रचनाओ हस्तप्रतोमां प्रकाशनननी राह जोती सचवायेली छे। तेवी ज एक रचनानुं अत्रे संपादन करवामां आवे छे।

कृति परिचय

प्रस्तुत कृति प्रसिद्ध कवि श्री वीरविजयजीनी रचना छे। २० स्थानक स्वयं मंगलरूप छे छतां कृतिना प्रारंभे कर्ताए श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथनुं स्मरण कर्युं छे। प्रस्तुत कृतिमां २० स्थानकना गुणोनी २० गाथा, मंगलाचरणनी १ अने खमासमणना १ दोहा सहित कुल २२ गाथाबद्ध लघु रचना छे। कृतिमां प्रत्येक स्थानकना गुणोनी संख्या दर्शावी आराधनानो निर्देश करेल छे।

शासनपति, आसन्न उपकारी भगवान महावीरस्वामीनुं उदाहरण टांकतां जणाव्युं के जेम प्रभुए नंदनमुनिना भवमां २० स्थानकतपनी आराधना करी हती तेम अन्य भव्यात्माओए पण आराधना करवी। कविए आ संदर्भेना दोहाने खमासमणना दोहा तरीके स्वीकारी प्रत्येक गुणनी गाथा बाद पुनः-उनः उच्चारवा निर्देश करेल छे। प्रतिलेखकनी क्षतिथी क्यांक-क्यांक योग्यरूपे आ दोहाना रही गयेला उल्लेखने तथा खमा० क्रमांकने अमें सुधारी एकरूपता जाळवी योग्यक्रमे नोंधेल छे। अंतिम गाथा फलश्रुति तथा कर्तानी छे तेना अंते पण प्रतिलेखक द्वारा खमा० दूहानो संकेत आपेल छे। त्यां खमा० आपवुं के केम ते संदिग्ध रहे छे। गुंण, भांख्या, ब्रंह्म वगेरे शब्दोमांथी अनावश्यक अनुस्वारोने हटावी संपादन करेल छे। कृतिनी भाषा अने विषय सरल तथा समझाय तेवा होवाथी तेनी विशेष स्पष्टता करवानी आवश्यकता रहेती नथी।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कर्ता परिचय

कृतिनी अंतिम गाथाथी कर्ता स्पष्ट जणाय छे। श्री शुभविजयजीना शिष्य सुप्रसिद्ध कवि श्री वीरविजयजी आ कृतिना कर्ता छे। कर्तानी अन्य अनेक रचनाओ श्रीसंघमां विशेष आदरपात्र बनी छे अने कर्ताना व्यक्तित्व तथा कर्तृत्वथी वाचको सुपरिचित हशे ज छतां यत्किंचित परिचय आपवानो प्रयास करुं छुं।

श्री वीरविजयजीनी परंपरा

तपागच्छीय परंपरामां भगवान महावीरनी ५५मी पाटे आचार्य श्री हेमविमलसूरि (वि.सं.१५२०-१५८३) तेमनी पाटे आचार्य श्री आनंदविमलसूरि (वि.सं.१५९५) तेमनी पाटे आचार्य श्री दानसूरि (वि.सं.१६२१) तेमनी पाटे आचार्य श्री हीरसूरि (वि.सं.१५८३-१६५२) तेमनी पाटे आचार्य श्री सेनसूरि (वि.सं.१७मी) तेमनी पाटे आचार्य श्री विजयसिंहसूरि (वि.सं.१८मी) तेमनी पाटे पंन्यास श्री सत्यविजय (वि.सं.१८मी) तेमनी पाटे मुनि श्री कपूरविजय (वि.सं.१८मी) तेमनी पाटे मुनि श्री खिमाविजय (वि.सं.१९मी) तेमनी पाटे गणि श्री जसविजय (वि.सं. १८९१) तेमनी पाटे गणि श्री शुभविजय (वि.सं.१९मी) तेमना शिष्य वीरविजयजी थया।

वीरविजयजीना शिष्य रंगविजयजी द्वारा रचित वीरविजयनिर्वाण रासना आधारे जद्रोसर नामे ब्राह्मण अने तेमनी पत्नी विजयाथी केशव नामनो पुत्र थयो। केशव राजनगरथी पालीताणा आवता मांदो पड्यो। श्री शुभविजयजी महाराजे तेमनी बीमारी दूर करी, समय जता वैराग्य उत्पन्न थवाथी खंभात संघने बोलावी वि.सं.१८४८ कार्तिक मासमां संयमनो स्वीकार कर्यो, एमनुं नाम वीरविजय राखवामां आव्युं। धीरविजय तथा भाणविजय गुरु भाईओ साथे शास्त्राभ्यास कर्यो। वि.सं.१८५८मां स्थूलिभद्र शियलवेल अने अष्टप्रकारी पूजा कृतिनी रचना कर्या बाद गुरु साथे अमदावाद आव्या। त्यांथी वटपद्र (वडोदरा) गया, त्यां तेमने पंन्यासपद आप्युं। शुभविजयजी वि.सं.१८६० फागण सुद १२ना दिवसे काळधर्म पाम्या पछी वीरविजयजी विहार करी क्रमशः लींबडी, वढवाण अने सुरत आव्या। त्यां एक अंग्रेजनो यति साथे तिथि संबंधी विवाद थयो वीरविजयजीए तिथि अंगे पोतनो मत प्रस्तुत कर्यो। तेनाथी अंग्रेज खुश थयो अने वीरविजयजीने सुरतमां खुशीथी रहेवा दीधा। वि.सं.१९०८ भाद्रपद वद ३ गुरुवारना रोज वीरविजयजी काळधर्म पाम्या।

वीरविजयजी जैनजगतना प्रखर विद्वान हता। एमना द्वारा रचित सुरसुंदरी रास

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(वि.१८५७), महावीरजिन स्तवन (वि.१८६४), चंद्रशेखरनृप रास (वि.१९०२) तथा अन्य जिनस्तुति, स्तवन, स्तोत्र, सज्झाय, पूजा, रास आदि संबंधी ४०० थी वधारे साहित्य प्राप्त थाय छे।

प्रत परिचय

प्रस्तुत कृतिथी संबंधित प्रत आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर, कोबामां उपलब्ध छे। हस्तप्रत संख्या ३४९५१ना आधारे आ कृतिनुं संपादन करवामां आव्युं छे। आ प्रतमां मात्र १ पत्र छे। आ प्रतनुं प्रतिलेखनवर्ष अनुमानित वि.सं. १८मी छे। अक्षर सामान्य, लेखनशैली सुंदर, स्पष्ट अने सुवाच्य छे।

आ प्रतना आधारे संपादननी तक आपवा बदल आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर, कोबा तथा संपादन कार्यमां मदद करवा बदल श्रुतसागर संपादक मंडलनो हुं खुब-खुब आभार व्यक्त करुं छुं।

२० स्थानकतप स्तवन

॥६०॥ श्री शंखेश्वर शिर नमी, कहेस्यूं तप सुविच्यार।
प्रणमंतां पातिक टले, जो प्रणिध्यांन उदार ॥१॥

बार गुणे अरिहा प्रभु, ते अरिहंतने ध्याय।
विधियोग योगोज्वले, तो तन्मई ते थाय ॥२॥

त्रिसलानंदन साहिबो नंदनभव में कीध।
तिम करिइं उजमालथी, श्रुत उपदेस प्रसीद खमा०१ ॥ ए दुहो गुणदीठ कहेवो.

कर्मदहन शितल हुआ, असंख्यात प्रदेश।
सिद्ध प्रभुने प्रणमीइं, गुण एकत्रीस विसेस ॥३॥ त्रिसला० ख०...२

सगविह पवयण वाघवा(?), भाख्या द्वादश अंग।
लही त्रीपदी गणधर प्रभु, प्रणमो तास उपांग ॥४॥ त्रिसला० ख०...३

छत्रीस छत्रीसी गुणे करी, वली आचरणा सिद्ध।
आचारय संप्रति समे, दीपक भावे दीठ ॥५॥ त्रिसला० ख०...४

ज्ञानादिक त्रिक भेदथी, अथवा वळी दस भेद।
थवीर नमुं पंचम पदे, कर्त्ता कर्म विछेद ॥६॥ त्रिसला० ख०...५

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पणवीस गुणे उवझायजी, भणे भणावे सूत्र।
सूरिपदलायक महागुणी भाखे नही उत्सूत्र ॥७॥ त्रिसला० ख०...६

षट् व्रत आदे सगवीस, गुणगण रयणनिधांन।
धर्मध्यांन ध्याता मुनी, भाव न शुक्ल प्रधान ॥८॥ त्रिसला० ख०...७

नांण नमो पद आठमे, सामान्ये सुविसेस।
पंचभेद दुख छेदना, नंदि श्रुत उपदेस ॥९॥ त्रिसला० ख०...८

दर्शन सडसठि भेदथी, होवें मीत संसार।
पुद्गल अरधे शिव लहे, स्थिति उत्कृष्ट विच्यार ॥१०॥ त्रिसला० ख०...९

वीनय करो जण तेरनो, ते पण च्यार प्रकार।
इम बावन भेद करी, विनय सुगुण भंडार ॥११॥ त्रिसला० ख०...१०

पंचभेद चारित्रना, अथवा सग दसभेद।
मूलव्रत निरतिचारना, धरंता तत्व उमेद ॥१२॥ त्रिसला० ख०...११

ब्रह्म नमो पद बारमे, नवविध सुरनर भेद।
धरता इह भव जस लही, परभव देव विनोद ॥१३॥ त्रिसला० ख०...१२

किरियाणं पद तेरमे, जे रमस्ये नरनारि।
पणवीस किरिया छंडीने, अक्रियपद निरधार(रि) ॥१४॥ त्रिसला० ख०...१३

द्वादश भेदे तप कह्यो, भेद वली पचास।
नाण सही तप निर्मलो, नही तस बालविलास ॥१५॥ त्रिसला० ख०...१४

लब्धिगुणे गोयम नमो, भेद भला अडवीस।
संभव(?) तपथी जांणीइं, जिनआणा सुजगीस ॥१६॥ त्रिसला० ख०...१५

उत्कृष्टे काले हुवे, जिन एकसो सित्तेर।
जघन्य दस वीस संप्रति, अंग प्रथम नही फेर ॥१७॥ त्रिसला० ख०...१६

चरणकरण सित्तरी गुणे, गुणवंता मुनीराज।
मूल उत्तर गुण निरमला, ते पण नमीइं आज ॥१८॥ त्रिसला० ख०...१७

नांणविसेषे पदे नमो, भेद एकावन जाण।
विशेषावस्यक में कहे, पूज्य वचन परमांण ॥१९॥ त्रिसला० ख०...१८

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पीस्तालीस आगम कह्यां, अगम अरथ सुविच्यार।
पद प्रणमो उगणीसमें, पूजा अष्टप्रकार ॥२०॥ त्रिसला० ख०...१९
सिद्धाचल आदे नमो, तीरथ पंच प्रकार।
भवजलथी तीरे ठवे, ते तीरथ निरधार ॥२१॥ त्रिसला० ख०...२०
इंम वीसस्थानक गुरुमुखे, उचरस्यें विधियोग।
श्री शुभवीर कहे भविक, लेहस्ये जिनपद भोग ॥२२॥ त्रिसला० ख०...

॥ इति वीसस्थांनक खमासण देवरावा संपूर्ण ॥

(अनुसंधान पृष्ठ ३३ से)

है बल्कि सुगम भी है। अ से ह तक प्रत्येक वर्ण के विभाग बनाए गए हैं तथा प्रत्येक विभाग के पूर्व उस वर्ण से संबंधित संक्षिप्त परिचय दिया गया है, जिससे कोष के अध्ययन में तथा क्रमिक अर्थ निर्णय में अत्यन्त सुगमता प्रतीत होती है।

प्रस्तुत कोष के सर्जक परम पूज्य आचार्य श्री राजेन्द्रसूरीश्वरजी महाराज साहब के प्रशिष्य एवं पूज्य मुनिवर श्री राजपुण्यविजयजी महाराज साहब के शिष्य पूज्य मुनि श्री राजसुन्दरविजयजी महाराज साहब हैं। ज्ञातव्य है कि पूज्य मुनिश्रीजी ने २३ वर्ष की अल्पायु एवं दीक्षा पर्याय के मात्र ९वें वर्ष में ही इस विशाल ग्रन्थ के सर्जन का कार्य प्रारम्भ किया और तीर्थाधिराज श्री सम्मेतशिखरजी से गुजरात के विहार मार्ग में मात्र ५५ दिनों में ही पूर्ण किया है। कोषरचना का प्रारम्भ माघ कृष्ण पंचमी वि. सं. २०६६ को कैमुरगिरिमाला-बिहार में हुआ और समापन चैत्र पूर्णिमा वि. सं. २०६६ को केसरियाजी तीर्थ राजस्थान में हुआ। पूज्यश्रीजी की यह रचना विश्व की एक अनन्य आश्चर्यकारक कृति है, ऐसा कहें तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। इससे पूर्व भी मुनिश्री ने अनेक संस्कृत, गुजराती एवं हिन्दी भाषामय साहित्य की रचना करके जैन साहित्य को समृद्ध किया है।

प्रस्तुत कोष का प्रकाशन एवं मुद्रण भी बहुत ही सुन्दर एवं आकर्षक है। आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर, कोबा परिवार का यह सौभाग्य है कि पूज्यश्री ने इस कोष की रचना में ज्ञानमंदिर में संकलित ग्रंथों का सबसे अधिक उपयोग किया है।

पूज्यश्रीजी की यह रचना एक सीमाचिह्नरूप प्रस्तुति है। संघ, विद्वद्वर्ग, जिज्ञासु इसी प्रकार के और भी उत्तम प्रकाशनों की प्रतीक्षा में है। मुनिश्री की साहित्यसर्जन यात्रा सदैव जारी रहे, ऐसी शुभेच्छा है।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पार्श्वनाथदशभव स्तवन

महेन्द्र सोभागमलजी तिलेसरा(आहोर)

आ कृति पार्श्वनाथ भगवानना दस भव रजु करती लघु रचना छे। आ रचनामां शरूआतनी १० गाथामां कविए पार्श्वनाथ भगवानना भवोनुं स्वरूप आलेख्युं छे। त्यार पछी ३ गाथामां कविए पार्श्वनाथ भगवानना तीर्थोनो महिमा वर्णवी छेल्लेथी बीजी गाथामां प्रभुना नामस्मरणनुं फल आलेख्युं छे। छेल्ले कृतिमां पोतानी गुरु-परंपराने आलेखी काव्यनुं समापन कर्यु छे। प्रस्तुत कृतिमां आवता विविध तीर्थोमां समेतशिखर, शंखेश्वर, गोडीजी, अंतरीक्ष, अवंती, मगसी, त्रंबावती(खंभात), भीडभंजन, चिंतामणि, पंचासर, पालविहार, वरकाणा, फलवृद्धि, रावण, नवखंडा, अझारानो समावेश थाय छे।

कृतिकार प्रेमविजयजी पंडित रत्नहर्षमुनिना भाई छे। तेमणे करेली अन्य रचनाओमां तीर्थमाला नामनी ४१ कडीनी रचना, आत्मशिक्षा भावना १८५ गाथानी रचना, शत्रुंजय स्तवन २३ गाथानी रचना, धनविजयनो रास तथा सीतासती सज्झाय ए लघु रचनाओ पण करी छे। विशेषमां तेओना जीवननो कोई परिचय अमारा ध्यानमां नथी। एकमात्र मुनि प्रेमविजयजीए संयमी पर्यायमां स्वीकारेला अभिग्रहोनी एक टीप(नोंध) अनुसंधानना छठ्ठा अंकमां छपायेली मळे छे। जे पूज्यश्रीनी आचार संपन्नता तथा त्याग विशेषने जणावे छे। मुनिश्रीना अन्य परिचय माटे विविध भंडारो तपासवानी जरुर छे। संपादनार्थे प्रस्तुत ग्रंथनी नकल आपवा बदल श्री नेमि विज्ञान कस्तुरसूरि ज्ञान भंडार (सुरत)ना व्यस्थापकोनो खूब खूब आभार।

पार्श्वनाथदशभव स्तवन

॥ॐ॥ *ढाल ॥ गौतमस्वामि रास माहिली ॥*

हु किम ए वीर जिणंद, भगति भोलो भोलव्युं ए-
गाथाय गाथाय पहिलि पदइ अनि त्रीजि पदइ कहिवी- ए देसी जाणवी ॥

कवीजन हो केरी माय, सरस वचन दीयो सरसती।
हुं गाइसि[१] हो दस भव **पास,** पास सेवा करि सू(सु)रपती ॥१॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पुतनपुर हो **अरिवृंदराय, विश्वभूत** परहोत[२] वली।
तस नंदन हो सुर अवतार, दोय बंधव मलि मनिरली ॥२॥

पहिलि भव हो कहूँ **मरभूत,** बीजि गज अति सुंदरु।
त्रीजि भव हो आठमइ सुरलोक, **कर्णवेग** चोथि विद्याधरु ॥३॥

पांचमि भव हो अमर विमान, छठि **वज्रनाभ** राय जाणीय।
सातमि भव हो पंच ग्रईवेक, आठमि चक्रव्रत[३] वखाणीय ॥४॥

नोमि[४] भव हो दसमि देवलोक, सुरपदवीय सुहामणी।
वाणारसी हो **आससेन** राय, तस घर दोलत अति घणी ॥५॥

तस घरणी हो **वामादेवी** नादि(मि), चउद सुपन लहि वली।
दसमि भव हो दसमि देवलोक*, पोस दशमी जनम्या मनरली ॥६॥

मा(म)होच्छव कि(क)रि हो सुरपती कोडि, माय ताय पोहती[५] मनरली।
प्रभावती हो पास कुमार, परणाव्या प्रभुजी वली ॥७॥

पंचविषइ हो भोगविलास, राज तजी संज्यम[६] वरी।
घनघाती हो पाम्यु केवलन्यान, कर्म रासि दूरि करी ॥८॥

समोसरणि हो बइठा स्वामि, बारि परषदा तिहा मली।
करि ज्योजन[७] हो वाण वखाण, भविजन भावि सुणि वली ॥९॥

देस विदेसि हो करीय विहार, नर नारी बहु तारीया।
समी(म्मै)तसिखर हो अणसण कीध, मुगतिपुरी पधारीया ॥१०॥

पास महमा हो ठामोठामि, **संखिसर गोडी** राजीयो।
अंतरीक हो **अवंती** जाण, **मगसी** महिमा गाजीयो ॥११॥

त्रंबावती हो **थंभण पास, भीडभंजण चं(चिं)तामणी।**
पंचासरो हो **पाल-विहार,** जस नामे ऋधि हो घणी ॥१२॥

वरकाणा हो **फलवधि**(र्धि)देव, **रावण** रोग हरि सदा।
नवखंडा हो **अझारू** नमेसि[८], नमता दुख नावि कदा ॥१३॥

---

*आ पंक्ति नवमा भवमां लखाई गई छे। जेथी अही "दसमि भव दसमि देवलोक[थी] एवा च्यवन पाम्याना संदर्भे प्रयोजाई हशे एवुं अमने लागे छे ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

धनहीन हो पामि धन कोडि, पुत्रहीन तस पुत्र मलि।
संकट विकट हो पड्या नर जेह, तुम नाम जपता स[हु] दूख टालि ॥१४॥
श्रीतपगच्छ हो **विजिसेन** राय, श्री**विमलहरिख**-सीस इम कहि।
पंडित **रत्नहर्ष** हो बंधु गायो पास, पास नामि **प्रेमविजि** सुख लहि ॥१५॥

॥ इति श्री पास दस भव तवनसंपूर्णमिति ॥ श्राविका फूला पठनार्थं ॥

शब्दकोश

१. गाइसि- गाईश, २. परहोत- पुरोहीत, ३. चक्रवत- चक्रवर्ति, ४. नोमि- नवमी, ५. पोहती- पहोंची, ६. संज्यम- संयम, ७. ज्योजन- योजन, ८. नमेसि- नमीश.

सुकृत अनुमोदना

परम पूज्य राष्ट्रसन्त आचार्यदेव श्री पद्मसागरसूरीश्वरजी महाराज साहब के ८६वें जन्मोत्सव पर दि. २९/०८/२०२० पर आयोजित अनेकविध शासन प्रभावना व धर्मप्रभावना के कार्यक्रम के अन्तर्गत पूज्य राष्ट्रसन्त की प्रेरणा से तथा पूज्य प्रशान्तसागरजी म. सा. के मार्गदर्शन में विविध महानुभावों के द्वारा १८० से अधिक साधर्मिक परिवारों को यथासम्भव आर्थिक सहयोग किया गया।

कोबा, ट्रस्टमण्डल की ओर से ट्रस्टी श्री दर्शितभाई शाह ने इस सुकृत की अनुमोदना करते हुए कहा कि इन कार्यों के द्वारा आप महानुभावों ने अपने नाम को सार्थक व जीवन को सही अर्थ में सफल बनाया है। आप लोगों के द्वारा किए गए कार्य वास्तव में श्रीसंघ व समाज के लिये कल्याणकारी हैं।

आप महानुभावों ने पूज्य गुरुदेवश्री की प्रेरणा पाकर जीवदया, साधर्मिकभक्ति, अनुकंपा, श्रुतसंरक्षण इत्यादि बहुविध सुकृतों में सहयोग किया है। इसके लिए श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र, कोबा तीर्थ परिवार हृदय से अनुमोदना करते हुए आभार व्यक्त करता है।

जिनशासन के प्रति श्रद्धावनत एवं पूज्य गुरुदेव के प्रति समर्पित आप सभी गुरुभक्तों के जीवन का प्रत्येक कार्य श्रीसंघ को सदैव नया संदेश, नई शक्ति व नई प्रेरणा देता रहेगा।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

धर्मकथानुयोगनी महत्ता अने श्री देवभद्रसूरिकृत कथारत्नकोश*

मुनिश्री पुण्यविजयजी

१. भारतीय कथासाहित्यनी विपुलता

आजनी प्रत्यक्ष दुनियामां जे मानवप्रजा वसे छे तेमां भणेला-गणेला कुशाग्रमतिवाळा लोको बे-त्रण टका जेटला ज छे, ज्यारे बाकीनो ९७ टका जेटलो भाग अक्षरज्ञान विनानो छतां स्वयंस्फुरित संवेदनवाळो छे। आमां केवळ अक्षरपरिचय धरावनारा अने अक्षरपरिचय विनाना छतां पोतानी हैयाउकलतथी व्यवहार अने परमार्थनो तोड काढनारा लोकोनो समावेश छे। आ ९७ टका जेटली अत्यधिक संख्या धरावनारा लोको विज्ञान, तत्त्वज्ञान, गणितविद्या, भूगोळ के खगोळविद्यामां ऊंडा ऊतरवा जराय राजी नथी तेम तैयार पण नथी। तेमने तो घणी सरळ रीते समज पडे अने ए समज द्वारा जीवननो रस माणी शकाय अने व्यवहार तेम ज परमार्थने समजी मानवजीवननी कृतकृत्यता अनुभवाय एवा साहित्यनी अपेक्षा छे। एटले ए वस्तुने आपणा पूर्व महर्षिओए विपुल प्रमाणमां कथा, उपकथा, आख्यान, आख्यायिकाओ, ऐतिहासिक चरित्रो आदि सर्जीने पूरी रीते संतोषी पण छे। आ रीते जोतां कथासाहित्यनो संबंध मुख्यतया आमजनता साथे छे अने आमजनता विपुल होवाथी तेनी साथे संबंध धरावतुं कथासाहित्य पण विपुल, विविध अने आमजनतानी खासियतोने लक्षमां राखी सुगम अने सुबोध भाषामां सर्जायेलुं छे। आ प्रकारनुं कथासाहित्य जेम जैन संप्रदायमां विपुल छे ए ज रीते वैदिक अने बौद्ध संप्रदायमां पण अति विपुल प्रमाणमां छे एटलुं ज नहि, पण भारतवर्षनी जेम भारतवर्षनी बहार पण आ जातनुं कथासाहित्य एटला ज प्रमाणमां उपलब्ध थाय छे। ज्ञाननी दृष्टिए विज्ञान, तत्त्वज्ञान, भूगोळ, खगोळ, गणित, आयुर्वेद, अध्यात्मशास्त्र, योगविद्या, प्रमाणशास्त्र वगेरे विद्यानुं महत्त्व जराय ओछुं नथी, परंतु ते बधी गहन विद्याओने सर्वगम्य करवानुं साधन मात्र एक कथासाहित्य छे, माटे ज भारतवर्षना तेम ज भारतनी बहारना प्राचीन-अर्वाचीन कुशाग्रमति विद्वानो पण कथासर्जननी प्रवृत्तिमां पडया छे अने ए द्वारा एमणे आमजनताने त्याग, तप, वैराग्य, धीरज, क्षमा, निःस्पृहता, प्राणिसेवा, सत्य, निर्लोभता, सरळता आदि गुणोनी सिद्धि माटे विविध प्रेरणा आपी छे। आमजनताने केळववानुं काम सहज साध्य नथी, तेम छतां त्याग,

*श्री जैन आत्मानंद सभा, भावनगर द्वारा सं. २०००मां प्रकाशित श्री देवभद्रसूरिकृत "कथारत्नकोश"नी प्रस्तावनामांथी अपेक्षित अंश साभार.

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सदाचार, सरळता, समयज्ञता आदि सद्गुणोथी विभूषित महापुरुषो आमजनताने उपदेश द्वारा केळवी शके छे, साहित्यसर्जन द्वारा दोरी शके छे अने अनेक गुंचो उकेली तेनी साधनाना मार्गने सरळ बनावी आपे छे। आ दृष्टिए पण कथासाहित्यनुं मूल्य अनेकगणुं वधी जाय छे।

२. जैन प्रवचनमां कथानुयोगनुं स्थान

जेम महाभारत अने रामायणना प्रणेता वैदिक महर्षिओए आमजनताना प्रतिनिधि बनी ए ग्रंथनी रचना करी हती, ए ज प्रमाणे जैन परंपराए पण आमजनतानी विशेष खेवना करवामां ज पोतानुं गौरव मान्युं छे। एक काळे ज्यारे वैदिक परंपरा आमजनतानी मटी राजाओनी आश्रित थई आमजनतानुं प्रतिनिधिपणुं गुमावी बेठी एटलुं ज नहि, पण ए आमजनतानी स्वाभाविक भाषा तरफ पण सुगाळवी थई गई, बराबर ए ज वखते जैन परंपरामां अनुक्रमे थयेल महामान्य तीर्थंकर भगवान श्री पार्श्वनाथ अने श्रमण भगवान श्री वीर-वर्धमानस्वामीए आमजनतानुं प्रतिनिधिपणुं कर्युं अने तेनी स्वाभाविक भाषाने अपनावी ते द्वारा ज पोतानुं धर्मतीर्थ प्रवर्ताव्युं अने आमजनता सुधी पहोंचे एवा साहित्य निर्माणने पूरेपूरो टेको आप्यो, एटलुं ज नहि, पण जैन प्रवचनना जे मुख्य चार विभाग बताव्या छे तेमां आमजनताना अतिप्रिय ए कथासाहित्यने खास स्थान पण आप्युं छे। जैन प्रवचन चरणकरणानुयोग, धर्मकथानुयोग, गणितानुयोग अने द्रव्यानुयोग, ए चार विभागमां वहेंचायेलुं छे। आमां आमजनतानुं प्रतिनिधित्व धरावनार धर्मकथानुयोग विशिष्ट स्थान भोगवे छे। सदाचरणोना मूळ नियमो अने तेमने आचरणमां मूकवानी विविध प्रक्रियाओना साहित्यनुं नाम चरणकरणानुयोग छे। ए सदाचरणो जेमणे जेमणे–स्त्री के पुरुषे–आचरी बताव्यां होय, एवां आचरणथी जे लाभो मेळव्या होय अथवा ए आचरणो आचरतां आवी पडती मुसीबतोने वेठी तेमने जे रीते पार करी होय, तेवां सदाचारपरायण धीर, वीर, गंभीर स्त्रीपुरुषोनां ऐतिहासिक के कथारूप जीवनना सर्जननुं नाम धर्मकथानुयोग छे। आ विषे शास्त्रकार तो एम पण कहे छे के, आवा प्रकारना धर्मकथानुयोग विना चरणकरणानुयोगनी साधना कठण बनी जाय छे अने जनता ते तरफ वळती के आकर्षाती पण नथी। आम जैन दृष्टिए 'एक अपेक्षाए चारे अनुयोगोमां धर्मकथानुयोग प्राधान्य धरावे छे' एम कहेवुं लेशमात्र अनुचित नथी। जेमां खगोळभूगोळनां विविध गणित आवे ते गणितानुयोग अने जेमां आत्मा, परमात्मा, जीवादि तत्त्वो, कर्म, जगतनुं स्वरूप वगेरे केवळ सूक्ष्मबुद्धिग्राह्य विषयो वर्णववामां आव्या होय ते द्रव्यानुयोग।

क्रमशः

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्राचीन पाण्डुलिपियों की संरक्षण विधि

राहुल आर. त्रिवेदी

(गतांक से जारी...)

हस्तप्रतों में लगे हुए दाग-धब्बों को हटाने के लिए सबसे बेहतर तकनीक यह है कि इसे सक्शन टेबल (Suction table) या फिर वैक्यूम प्रोब (Vacuum probe) पर यह प्रक्रिया की जाये। किस तरह के दाग को किन केमिकलों से हटाया जा सकता है, उनके नाम इस प्रकार हैं -

1. पेन्ट - एसीटोन, एल्कोहल व जाइलिन या पायाराडिन का मिश्रण जिसे बाद में पानी से या तारपीन से धो दिया जाये।
2. तेल - हेक्सेन, टोलुइन या कार्बन-ट्रेटाक्लोराइड
3. मोम - पेट्रोल, हेक्सेन, टोलुइन
4. सेलोटेप - ड्रायक्लोरोमिथेलिन
5. फफूँद का दाग - ईथाइल एल्कोहल
6. चाय या कॉफी - पोटेशियम परबोरेट
7. ग्रीस/ऑइल - ट्रायक्लोरोइथेलिन या कार्बन टेट्राक्लोराइड
8. बॉल पेन - डाइमेथिल फॉर्मेमाइड (dimethylformamide)
9. पानी के दाग - वॉटर + ईथेनोल (आवश्यक मात्रानुसार)

कागज में ऐसे कई दाग होते हैं जो धोने व कार्बनिक केमिकलों से नहीं निकाले जा सकते हैं। ऐसे दागों को **ब्लीचिंग** के माध्यम से हटाया जाता है, लेकिन यह पद्धति बहुत हानिकारक है। क्योंकि यह प्रक्रिया पेपर को कमजोर कर देती है। ब्लीचिंग के कई तरीके हैं और अपने कार्यों के अनुसार उन्हें निम्न भागों में बाँटा जा सकता है-

1. ऑक्सीकरण अभिकर्मक

क) क्लोरीन यौगिक

1. हाइपोक्लोराइट विलयन
2. क्लोरीन डाइ-ऑक्साइड
3. क्लोरोएमिन
4. क्लोरस अम्ल

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ख) क्लोरीन रहित यौगिक

1. पोटेशियम परमेंगनेट 2. सोडियम परबोरेट

3. हाइड्रोजन पर-ऑक्साइड 4. ओज़ोन

यह प्रक्रिया अपने आप में बहुत लम्बी होती है, जिसमें पर्याप्त सावधानी बरतनी पडती है। इसलिए यहाँ मात्र सारभूत बातें ही बताई गई हैं ।

पाण्डुलिपियों की मेन्डींग (मरम्मत) तथा फूल लाईनिंग

पाण्डुलिपियों में जिनकी दशा सामान्य है, जिसमें किनारियाँ खंडित होना, जीवातकृत छिद्र होना, पत्र में छेद होना, ऐसी हस्तप्रतों की मेन्डींग प्रक्रिया की जाती है। जिसमें जापानी आदि टिश्यु पेपर के फाईबर (कागज के रेशा/तंतु) से छिद्रों को बंद कर दिया जाता है, आवश्यकतानुसार स्टार्च (मैदा पेस्ट) व कागज का उपयोग किया जाता है। इस मेन्डींग प्रक्रिया में Leaf Casting मशीन का उपयोग किया जाता है।

पाण्डुलिपियों में जिनकी दशा अति जीर्ण हो चुकी है, पत्र को छूते ही वे टूटने लगते हैं, वैसी कमजोर हस्तप्रतों पर टिश्यु पेपर से मजबूती दी जाती है। हस्तप्रत की जीर्णता के अनुसार लेमीनेशन की तरह जापानी टिश्यु पेपर से आधार दिया जाता है। जिसे कन्जर्वेशन की भाषा में **"फुल लाईनिंग"** कहते हैं। यह कार्य तब किया जाता है जब हस्तप्रत के पन्ने फटे हुए हों, टुकडे-टुकडे हो गए हों या उठाते समय ही पन्ने टूट जाते हों, उनमें अत्यधिक छिद्र हो गए हों, उन पत्रों के ऊपर फुल लाईनिंग की जाती है। यदि हस्तप्रत की स्थिति मध्यम है, जैसे कि मात्र किनारी खंडित या जीर्ण है तो टिश्यु पेपर या लोकता पेपर से किनारियों के ऊपर लाईनिंग की जाती है, इस प्रक्रिया को "तब्दील ए बदहवासी" कहते हैं। यह कार्य करते समय प्रत में कोई नुकसान न हो इसका पूरा ध्यान रखा जाता है। यह प्रक्रिया पूरी तरह से Reversible होती है अर्थात् किए गए कार्य को प्रत को बिना नुकसान पहुँचाए हटाया भी जा सकता है।

चिपके पत्रों को अलग करना

पाण्डुलिपियों में एक ऐसी स्थिति भी होती है, जिसमें हस्तप्रत के पन्ने पूरी तरह से चिपके हुए होते हैं। पन्ने इस तरह से चिपके होते हैं कि काफी पन्ने होते हुए भी वह एक पुट्ठे की तरह प्रतीत होती है। ऐसी स्थिति में बहुत सावधानी रखनी पडती है। इस प्रक्रिया में Nebulizer मशीन का प्रयोग किया जाता है। इन चिपकी हुई हस्तप्रतों के ऊपर सबसे पहले इस मशीन से नमी दी जाती है, नमी देने पर उसका चिकनापन

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कम हो जाता है। उसके बाद धैर्यपूर्वक उन चिपके हुए पन्नों को अलग किया जाता है। कई बार पन्नों के टुकडे भी हो जाते हैं। उन जीर्ण पन्नों की भी फुल लाईनिंग कर सकते हैं, लेकिन उसमें फटे हुए पन्नों का पाठ मिलाकर उन्हें परस्पर जोड़कर बहुत सावधानी से लाईनिंग करनी पड़ती है। पाठ मिलान का कार्य किसी विद्वान व्यक्ति के द्वारा ही कराया जा सकता है, सामान्य कन्जर्वेटर यह कार्य नहीं कर सकता है।

पेपर के भी अलग-अलग प्रकार होते हैं, जैसे जापानी टिश्यु पेपर, नेपाली टिश्यु पेपर, लोकता पेपर, ब्लोटिंग पेपर इत्यादि। इन सभी पेपरों की अलग-अलग खासियतें होती हैं। वर्तमान काल में जापानी टिश्यु पेपर का ही अधिकतर उपयोग किया जाता है। जहाँ तक हो सके 3.8 से 6 GSM के पेपर का ही उपयोग किया जाता है, जितना कम GSM उतनी पारदर्शिता ज्यादा।

जिससे हस्तप्रत में लिखित अक्षरों को अच्छी तरह से पढ़ा जा सके। लाईनिंग करते समय यह ध्यान रखा जाता है कि प्रत में जो अक्षर दिखाई दे रहे हैं, उन अक्षरों की मौलिकता बनी रहे।

जिन पाण्डुलिपियों में मात्र किनारी खंडित हों अथवा जीवातकृत छिद्र हों, उनमें फूल लाईनिंग की आवश्यकता नहीं होती है। वहाँ मात्र हस्तप्रत की स्थिति को ध्यान में रखकर आवश्यकतानुसार आंशिक रूप से उपर्युक्त पेपरों का प्रयोग किया जाता है।

हस्तप्रत की फूल लाईनिंग में गोंद के रूप में Jinshofu (Gluten free starch powder) प्रवाही का उपयोग किया जाता है। लेकिन इसकी कीमत अधिक होने के कारण हम सामान्य मैदे का उपयोग भी कर सकते हैं। उसकी प्रक्रिया अलग है। उस मैदे में से स्टार्च (ग्लूटेन फ्री करके) निकाल कर उसके पारदर्शक प्रवाही का उपयोग किया जाता है। वह प्रत को नुकसान नहीं करता है।

लाईनिंग कार्य में गोंद के रूप में सी.एम.सी.(Carboxy methyle cellulose) का भी उपयोग किया जाता है।

इस प्रकार **उपचारात्मक संरक्षण** के विषय में मुख्य प्रक्रिया का सारभूत संक्षेप विवरण प्रस्तुत किया गया है। अधिक जानकारी प्राप्त करने हेतु इस विषय से सम्बन्धित ग्रंथो का अध्ययन किया जा सकता है। फिर भी सही विशेषज्ञों की देखरेख में प्रेक्टीकल ट्रेनिंग का कोई विकल्प नहीं है।

(क्रमशः)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पुस्तक समीक्षा

डॉ. हेमन्त कुमार

ग्रन्थ नाम- सुन्दरैकाक्षरकोष, **वृत्ति**- पुण्यसौम्या, **कर्ता**- मुनि श्री राजसुन्दरविजयजी, **प्रकाशक**-श्रुतज्ञान संस्कारपीठ, अहमदाबाद, **प्रकाशन वर्ष**- वि. सं. २०७४, **भाग**-२, **भाषा**- संस्कृत, **विषय**- एकाक्षरी शब्द के विविध अर्थ एवं व्युत्पत्त्यादि तथा तद्विषयक ग्रंथ का आधार।

प्रत्येक भाषा के पास यथोचित शब्दभण्डार तो होता ही है, अन्यथा व्यवहार ही नहीं हो सकता है। जिस भाषा के पास प्रत्येक अर्थ के सूक्ष्म-सूक्ष्मतम भेदों को अभिव्यक्त करने के लिए पर्याप्त शब्द हों, अनेक पर्याय हों तथा संयोगानुसार अभिनव शब्दों को प्रयोग में लाने की अनुकूलता हो वह भाषा ही अत्यन्त समृद्ध मानी जाती है। ऐसी ही एक अत्यन्त समृद्ध भाषा संस्कृत भाषा है।

प्राचीन काल से ही संस्कृत ग्रन्थ सर्जन की परम्परा अद्यावधि निरन्तर चली आ रही है। निरन्तर चलती यह परम्परा ही हमारी संस्कृति के प्रगति को द्योतित करती है। संस्कृत वाङ्मय के विशाल गगन में कोष का एक महत्त्वपूर्ण स्थान है। व्याकरण मात्र यौगिक शब्दों को सिद्ध करता है, किन्तु कोष रूढ़ और योगरूढ़ शब्दों की सिद्धि के लिए अनिवार्य है।

प्रस्तुत कोष में देवनागरी वर्णमाला के केवल अ से ह तक के एकाक्षरी शब्दों की संकलना की गई है। संस्कृत वाङ्मय में अनेक एकाक्षरकोष उपलब्ध होते हैं, उन सभी में से एवं व्यापक संस्कृत साहित्य में से दोहन करके इस सर्वसंग्रहात्मक विशाल कोश का निर्माण किया होने से यह उपलब्ध सभी कोशों का शिरमौर बनता है। किन्तु यह सर्वश्रेष्ठ है। एक वाक्य में कहें तो संस्कृत विश्व इतिहास में सर्व प्रथमबार इतने व्यापक एवं सुविस्तृत एकाक्षरकोष का सर्जन हुआ है। जैसे उपलब्ध एकाक्षरकोषों में तीन कोष ही शताधिक श्लोक निबद्ध हैं, जिसमें बृहत्तम कालिदासव्यास रचित एकाक्षरनाममाला १५३ श्लोकमय है। उसके सामने सुन्दरैकाक्षरकोष ८०० श्लोकमय है। श्लोकमान की भिन्नता से ही ग्रन्थ की विशालता एवं विशेषता स्वतः स्पष्ट हो जाती है।

प्रस्तुत की कोष की एक और विशेषता यह है कि इसमें प्रत्येक अर्थ साधार प्रदर्शित हुआ है। प्रत्येक अर्थ के साक्षीपाठ के लिए पुण्यसौमा नामक स्वोपज्ञ वृत्ति का भी सर्जन हुआ है, जो साथ में ही प्रकाशित की गई है। कोष न मात्र प्रामाणिक

(अनुसंधान पृष्ठ २४ पर)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

समाचार सार

कोबा तीर्थ में राष्ट्रसन्त पूज्यश्री के पावन सान्निध्य में आयोजित होनेवाले आगामी कार्यक्रम

दि. 28-10-2020, बुधवार आश्विन, शुक्ल-१२	महाप्रभावक श्री सिद्धचक्र महापूजन
दि. 14-11-2020, शनिवार आश्विन कृष्ण-१४	श्री घण्टाकर्ण महावीरदेव महापूजन हवन विशिष्ट अनुष्ठान तथा दोपहर को कार्यालय में चोपड़ा पूजन.
दि. 16-11-2020, सोमवार कार्त्तिक शुक्ल-२ नूतन वर्ष सं. २०७७ दोपहर 12-39 (विजय मुहूर्त में)	जिनालय, रत्नमन्दिर तथा गुरुमन्दिर के द्वारोद्घाटन राष्ट्रसन्त पूज्यश्री एवं गुरुवरों के श्रीमुख से नूतन वर्ष का महामांगलिक तथा मन्त्रजाप. ○ (कोबा तीर्थ से महामांगलिक का जीवंत प्रसारण) महामंगलकारी गुरु गौतमस्वामी महापूजन.
दि. 19-11-2020, गुरुवार कार्त्तिक शुक्ल-५	ज्ञानपंचमी के शुभदिवस पर ज्ञान तथा ज्ञान की देवी माँ सरस्वती का विशिष्ट अनुष्ठान।
दि. 21-11-2020, शनिवार कार्त्तिक शुक्ल-७	तपागच्छ के अधिष्ठायक श्री माणिभद्रवीर देव का पूजन तथा हवन विधान
दि. 24-11-2020, मंगलवार कार्त्तिक शुक्ल-१०	राजराजेश्वरी श्री पद्मावतीदेवी पूजन तथा हवन विधान

संक्षिप्त समाचार

श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र, कोबातीर्थ परिसर में दि. १८अक्टूबर २०२० को एपिक हॉस्पीटल के सेवार्थियों के लिए एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसके अन्तर्गत हॉस्पीटल के विशेषज्ञ चिकित्सक व अन्य पदाधिकारी सपरिवार पधारे तथा राष्ट्रसन्त परम श्रद्धेय पूज्यप्रवर आचार्यदेव श्री पद्मसागरसूरीश्वरजी महाराजा के अन्तर्स्पर्शी प्रवचन का श्रवण कर धन्यता का अनुभव किया। साथ ही ज्ञानमंदिर व संग्रहालय का अवलोकन किया।

आयोजक - मातुश्री श्रीकान्ताबहन रणजीतमलजी वागरेजा (जैन) परिवार।

For Private and Personal Use Only

पार्श्वनाथ प्रभु के १० भव प्रसंग चित्र ('२३ तीर्थंकरों का चित्रसंपुट' में से साभार)

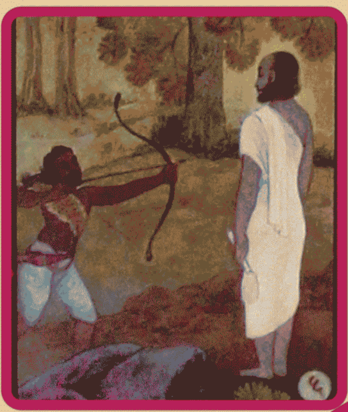

भव-६

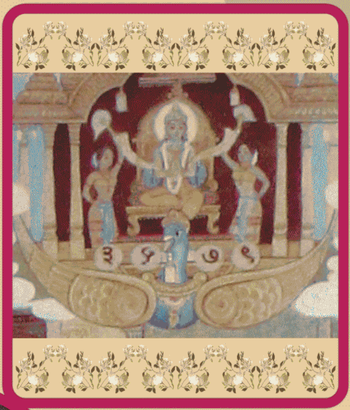

भव-७

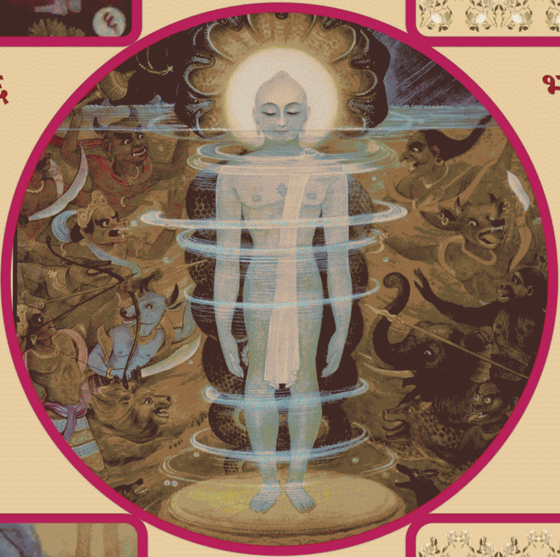

भव-१०

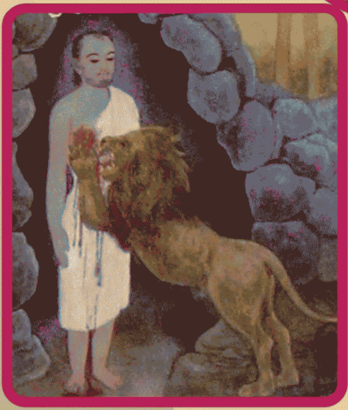

भव-८

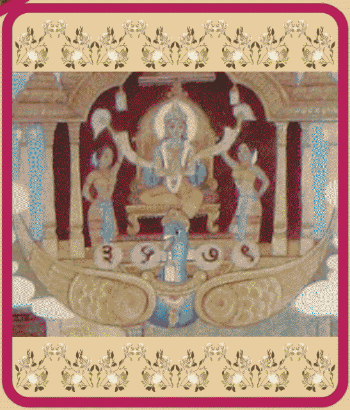

भव-९

For Private and Personal Use Only

Registered Under RNI Registration No. GUJMUL/2014/66126 SHRUTSAGAR (MONTHLY).
Published on 15th of every month and Permitted to Post at Gift City SO, and on 20th date
of every month under Postal Regd. No. G-GNR-334 issued by SSP GNR valid up to 31/12/2021.

प. पू. राष्ट्रसंत आचार्यदेव श्री पद्मसागरसूरीश्वरजी म. सा. के दर्शनार्थ
पधारे गुजरात राज्य के गृहमंत्री श्री प्रदीपसिंह जाडेजा

BOOK-POST / PRINTED MATTER

प्रकाशक
श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र
आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर, कोबा
जि. गांधीनगर ३८२४२६
फोन नं. (०७९) २३२७६२०४, २०५, २५२
फेक्स (०७९) २३२७६२४९
Website : www.kobatirth.org
email : gyanmandir@kobatirth.org

Printed and Published by : HIREN KISHORBHAI DOSHI, on behalf of SHRI MAHAVIR JAIN ARADHANA KENDRA, New Koba, Ta.&Dist. Gandhinagar, Pin-382426, Gujarat.
And **Printed at :** NAVPRABHAT PRINTING PRESS, 9, Punaji Industrial Estate, Dhobighat, Dudheshwar, Ahmedabad-380004 and
Published at : SHRI MAHAVIR JAIN ARADHANA KENDRA, New Koba, Ta.& Dist. Gandhinagar, Pin-382426, Gujarat. **Editor :** HIREN KISHORBHAI DOSHI

For Private and Personal Use Only